# कौन था ज़ाक कुस्टो?

# कौन था ज़ाक कुस्टो?

लेखन: नीको मैडीना

चित्रांकन: डी. डी. पुत्रा

भाषांतर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

पापा के लिए, जिन्होंने मुझे बाराकुडा (हिलसा)
मछलियों का पीछा करने से बरजा था।
- एन.एम.

मेरे सर्वस्व को, असीम धीरज और सहयोग के लिए।
- डी.पी.

## अनुक्रम पेज


कौन था ज़ाक कुस्टो?
चलायमान
बिखर गए सपने
सी-मस्केटीयर्स
पानी तले सांस लेना
युद्धरत फ्रांस
आक्वा लंग
हदों को धकेलना
समुद्र में जीना
समुद्र तल का जैव-जगत
दूरदर्शन का सितारा
भावी पीढ़ियाँ
तिथिक्रम
पुस्तक सूची

# कौन था ज़ाक कुस्टो?

1920 में ज़ाक कुस्टो और उसका परिवार न्यू यॉर्क सिटी में रह रहा था।

ज़ाक और उसके बड़े भाई पियेर आन्तवान को वेस्ट पिच्यानवें स्ट्रीट में अपने अपार्टमेंट के बाहर सड़क पर स्टिक-बॉल खेलना अच्छा लगता था।

स्टिक-बॉल के अलावा ज़ाक को खेलकूद खास पसन्द नहीं थे। वह दुबला-पतला, मरियल-सा था और दूसरे बच्चों से बेहद शरमाता भी था।

उस गर्मियों में दोनों भाईयों को वरमोंट में एक शिविर में भेजा गया। वहाँ घुड़सवारी करते समय एक दिन उसके घोड़े ने ज़ाक को धरती पर पटक दिया। इसके बाद गर्मियों भर उसने घुड़सवारी करने से इन्कार ही कर दिया।

सज़ा के बतौर ज़ाक को झील से पत्तियाँ और टहनियाँ हटा उसे साफ करने भेजा गया ताकि तैराक लड़के साफ पानी में तैर सकें।

इस तथाकथित सज़ा ने ज़ाक की ज़िन्दगी हमेशा के लिए बदल दी।

ज़ाक ने गोता लगा तल तक जाने की कोशिश की, इस उम्मीद से कि वह वहाँ की दुनिया देख सकेगा। पर पानी इतना गंदला था कि उसकी आँखें चिरपिराने लगीं। उसे अपने हाथों के परे कुछ भी नज़र न आया।

इसके बावजूद वह पानी की सतह के नीचे देर तक रहना चाहता था। सो जितनी देर हो सका वह अपनी सांस रोके रहा।

बाद में उसने खोखले सरकंडे की मदद से सांस लेने की कोशिश की। पर इससे भी खास फायदा न हुआ।

पानी के नीचे तैरते समय ज़ाक खुद को आज़ाद महसूस करता था। उसने गर्मियों भर तालाब जाने के हरेक मौके का फायदा उठाया।

वयस्क होने पर ज़ाक ने पानी की सतह के नीचे गोता लगाने, सांस लेने, फिल्म उतारने, यहाँ तक कि ज़िन्दगी जी पाने की नई तकनीकें ईजाद करने में पहल की। अपनी शर्म-झिझक पर काबू पा ज़ाक दुनिया की एक जानी-मानी शख्सियत बना - धडल्ले से बिकने वाली किताबों का लेखक, ऑस्कर विजेता फिल्मकार और टेलिविज़न अदाकार। ज़ाक ने दुनिया भर के लाखों-करोड़ों लोगों तक समुद्री जीव-जगत की रोमांचक छवियाँ पहुँचाईं।



# अध्याय 1
# चलायमान

ज़ाक कुस्टो का जन्म 11 जून 1910 में, अटलांटिक महासागर के तट से 50 मील दूरी पर बसे एक छोटे-से मंडी कस्बे में हुआ था।

इसके कुछ ही समय बाद उसके माता-पिता, एलिज़ाबेथ और डानियेल उसके और उसके बड़े भाई पियेर आन्तवान के साथ पेरिस में अपने घर लौट आए।

डानियेल पेरिस में रहने वाले एक अमरीकी करोड़पति के वकील और व्यक्तिगत सहायक थे। अपने काम के सिलसिले में उन्हें अपने बॉस के साथ लगातार सफर करना पड़ता था। ज़ाक के बचपन में कुस्टो परिवार लगातार चलायमान रहा। ज़ाक की सबसे आरंभिक यादों में रेलगाड़ी की छुकछुक की धुन के साथ सोना शामिल था।

हालांकि ज़ाक काफी कमज़ोर और अक्सर नासाज़ रहने वाला बच्चा था, उसके मनोबल में कोई कमी न थी। बचपन में ही वह डूविल में समुद्र तट पर बने एक रिसोर्ट में गया था। वहाँ उसने तैरना सीखा, महज चार साल की उम्र में।

1914 में पहला विश्व युद्ध आरंभ हुआ। जर्मन सेनाओं ने फ्रांस पर हमला बोला। डानियेल का बॉस अमरीका लौट गया। ज़ाक के पिता अब बेरोज़गार हो गए।

जर्मन सेना ने शहर को घेर लिया। पेरिसवासी ब्रिटिश और मित्र राष्ट्रों की मदद से उनका सामना कर रहे थे। सैकड़ों टैक्सियाँ शहर और युद्ध मोरचे के बीच आती-जातीं ताकि वहाँ सैनिक और रसद समय पर पहुँचे।

फ्रांस की सरकार पेरिस से हटी और बुरदो को राजधानी बनाया गया। जर्मन सेना पेरिस को जीत तो नहीं सकी पर युद्ध के चलते वहाँ रहना बेहद मुश्किल हो गया।



खाने की सामग्री, पानी और बिजली, सब पर राशन था। लोगों को तयशुदा मात्रा में से चीज़ें मिला करती थीं। साथ ही जर्मन हवाई जहाज़, जो ज़ैपलिन कहलाते थे लगातार पेरिस पर बमबारी करते थे।

# ज़ैपलिन

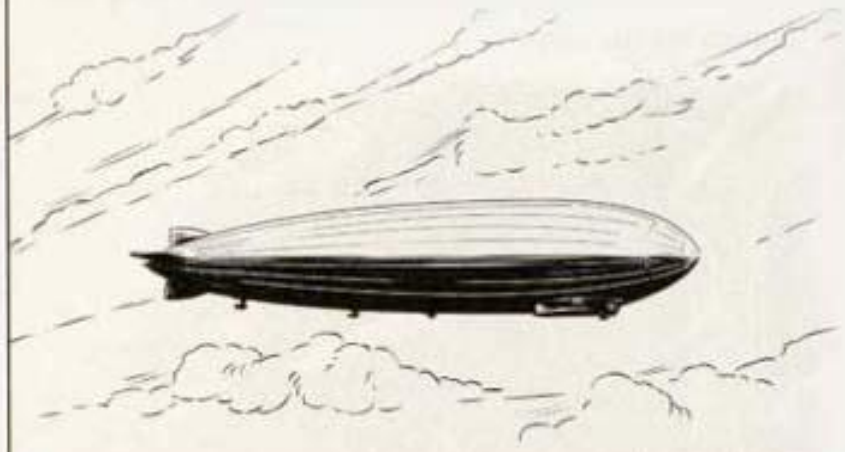

अपने अन्वेषक काउन्ट फॉन ज़ैपलिन के नाम से जाने वाले ये विशाल हवाई जहाज़ थे। वे कई सौ फीट लम्बे होते थे और उस समय के दूसरे हवाई जहाज़ों से अधिक ऊपर उड़ सकते थे। पुराने किस्म के दिखने वाले ये जहाज़ मज़बूत स्टील के ढ़ांचे पर कपड़ा तान कर बनाए जाते थे। इनके अंदर गैस से भरे थैले होते थे। ढ़ांचा जहाज़ को ऊंचा उठाने में मदद करता था और बाहर लगे प्रोपैलर उसे आगे को बढ़ाते थे।

ज़ैपलिन जहाज़ों ने पहले विश्व युद्ध के दौरान लगातार लंदन और पेरिस पर बमबारी की। हालांकि उनकी निशानेबाज़ी बहुत अच्छी नहीं थी, वे बहुत कम समय में कई बम गिरा पाते थे।

युद्ध खत्म होने के बाद ज़ैपलिन जहाज़ों का इस्तेमाल आज के व्यावसायिक यात्री विमानों की तरह किया जाने लगा। वे सवारियों को अटलान्टिक के आर-पार उड़ा कर ले जाने लगे। 1937 में, न्यू जर्सी में हिन्डनबर्ग हवाई जहाज में विस्फोट हुआ। इस हादसे में छत्तीस लोग मारे गए। इसी के साथ ज़ैपलिन हवाई जहाज़ों का युग भी समाप्त हो गया।

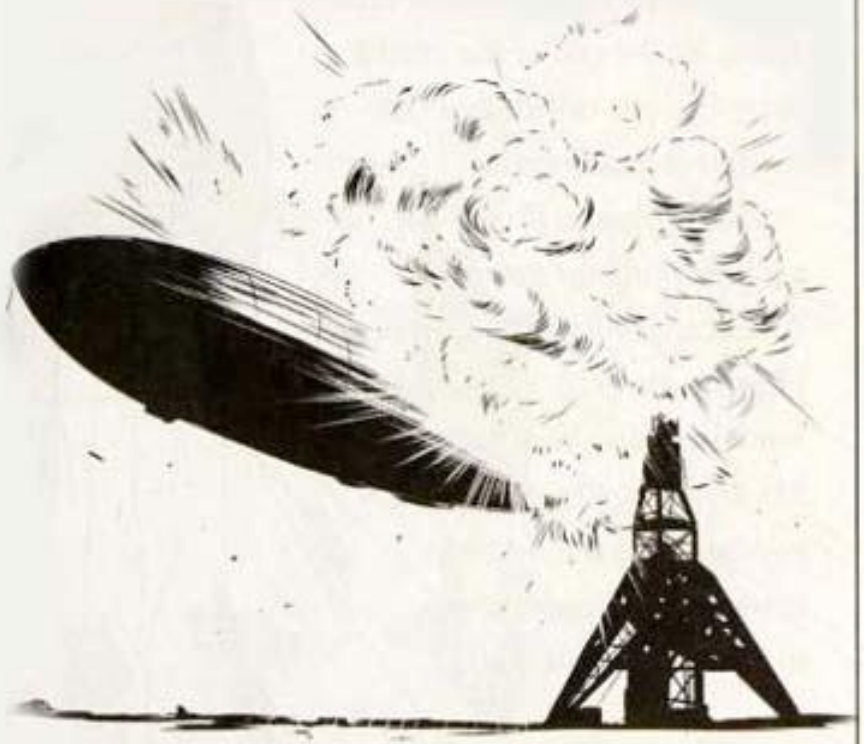

जब ज़ाक सात बरस का हुआ कुस्टो परिवार अपने मूल गाँव लौट आया।

1918 की बसन्त में जर्मन सेना ने पेरिस पर काबिज़ होने की आखिरी बार कोशिश की। पर इस बार फ्रांसीसी सेना की मदद के लिए ब्रिटिश और अमरीकी सेना मौजूद थी। जर्मन सेना फिर एक बार पीछे हटने पर मजबूर हुई। साल के अंत तक युद्ध विराम हो गया। 1919 में युद्ध औपचारिक रूप से समाप्त हो गया।

युद्ध के बाद डानियेल को एक अन्य अमरीकी करोड़पति यूजीन हिगिन्स के लिए काम करने का मौका मिला। 1920 में कुस्टो परिवार मिस्टर हिगिन्स के साथ न्यू यॉर्क चला आया। अटलांटिक पार करने की इस दस दिवसीय समुद्री यात्रा के दौरान ज़ाक अपने खोल से बाहर निकलने लगा।

उसने जहाज़ के कार्मिकों से दोस्ती की और
उस विशाल जहाज़ का चप्पा-चप्पा छान मारा।

अमरीका में ज़ाक का बड़ा भाई उसका एकमात्र और सच्चा दोस्त था। पियेर आन्तवान कुस्टो खुद को 'पैक' (पीएसी) कहा करता था जो उसके नाम के आरंभिक अक्षर थे। अपने बड़े भाई की देखा-देखी ज़ाक ने भी खुद को 'जैक' कहना तय किया। यह सुनने में खासा अमरीकी नाम जो लगता था।

उस गर्मी के महीनों में ज़ाक और पियेर वरमोंट शिविर में गए। वहाँ ज़ाक यह कल्पना करने लगा कि पानी की सतह से नीचे पूरी आज़ादी के साथ इधर-उधर तैर पाना और सतह पर उठे बिना देर तक नीचे ही सांस ले पाना कैसा लगेगा।

1923 में कुस्टो परिवार वापस फ्रांस लौटा। ज़ाक ने तीन महीने के जेब खर्च को जमा कर एक पुराना हाथ से घुमाए जाने वाला बेबी मूवी कैमरा खरीदा। घर पहुँचते ही उसने कैमरा के कल-पुर्ज़े खोल डाले और तब उसे फिर से जोड़ लिया।

हाथ में कैमरा पा ज़ाक अपनी झिझक से मानो पूरी तरह उबर गया। लैन्स से झांकते हुए वह किसीसे भी बात कर सकता था...सुन्दर लड़कियों तक से। उसने कई दोस्त बनाए और वे मिल कर फिल्में बनाने लगे। चौदह साल की उम्र में उसने अपने चचेरे भाई की शादी की पहली लम्बी फिल्म बनाई।

ज़ाक को स्कूल नापसन्द था। उसे नम्बर भी ख़राब ही मिलते थे। कक्षाओं में चुपचाप बैठने के बदले उसकी रुचि फिल्में बनाने में थी। एक बार उसे स्कूल में सीढ़ियों के नीचे वाली खिड़कियों

को तोड़ते पकड़ा गया। उसका कहना था कि वह तो सिर्फ प्रयोग कर रहा था। वह यह जाँच रहा था कि पत्थर अगर हल्के या ज़ोर से फेंका जाए तो क्या फ़र्क होता है।

यह प्रयोग ज़ाक ने सतरह खिड़कियों पर किया! नतीजतन उसे स्कूल से निकाल दिया गया।

ज़ाक के माता-पिता ने उसका कैमरा ज़ब्त कर लिया और उसे 250 मील दूर एक सख़्ती बरतने वाले आवासीय स्कूल में भेज दिया। यह अजीब लग सकता है पर स्कूल के सख़्त कायदे-कानून ज़ाक को रास आए। कैमरा के न होने से वह ध्यान भी केन्द्रित कर सका। 1929 में उन्नीस वर्षीय ज़ाक हाई स्कूल पूरा कर सका। अगले साल वह फ्रांसीसी नौसेना में भरती हो गया।

अपने भरोसेमन्द कैमरा को फिर से हाथों में पा ज़ाक खोजबीन की रोमांचक ज़िन्दगी के लिए तैयार था।



**अध्याय 2**

# बिखर गया सपना

नौसेना में ज़ाक को तोपखाना अफसर का प्रशिक्षण दिया गया। इसका मतलब था कि वह लड़ाकू जहाज़ के हथियारों के लिए ज़िम्मेदार था। प्रशिक्षण को सम्मान के साथ पूरा करने के बाद साथी कैडेटों के साथ उसे साल भर के लिए एक जहाज़ पर तैनात किया गया। उस जहाज़ ने दुनिया का पूरा गोल चक्कर काटा। यह फ्रांसीसी नौसेना में प्रशिक्षण के बाद ज़रूरी था - जो बेहद उत्तेजक था।

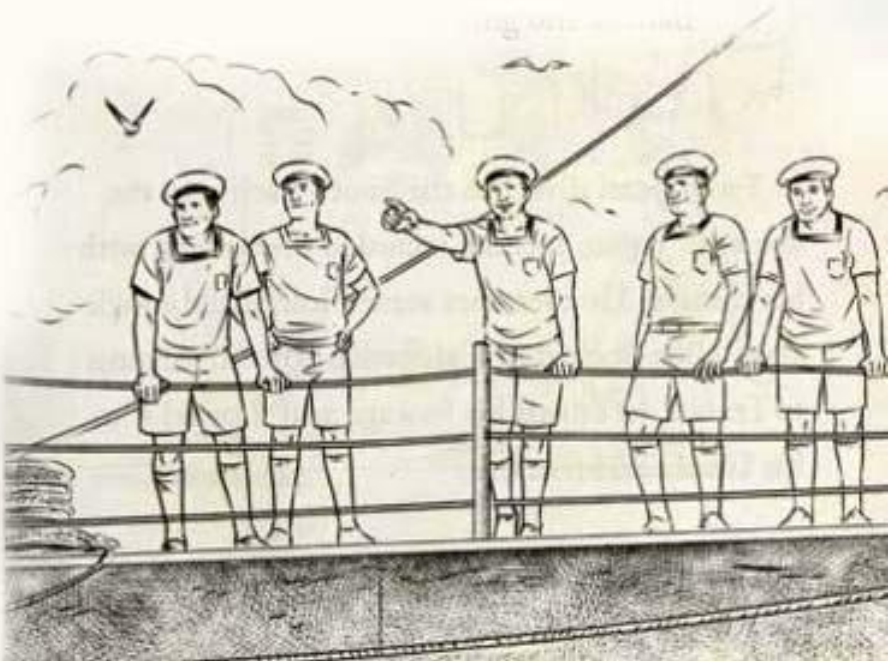

दक्षिणी प्रशान्त महासागर के मोती गोताखोरों से लेकर जापान के तटों तक के नज़ारों को ज़ाक ने अपने कैमरा में कैद कर लिया। जब उनका जहाज़ कैलिफोर्निया में था उसकी मुलाकात हॉलीवुड के कुछ सितारों से हुई। फ्रांस लौटने पर उसने अपने खींचे चलचित्रों का सम्पादन किया और जो फिल्म बनी उसे अपने परिवार और दोस्तों को दिखाई।



पर ज़ाक लम्बे समय तक घर पर नहीं रह सका। 1933 में नौसेना ने उसे सुदूर पूर्व में तैनात किया। जापान यात्रा के दौरान उसकी मुलाकात एक फ्रांसीसी व्यवसायी हैनरी मैल्क्योर से हुई। मिस्टर मैल्क्योर 'एयर-लिक्विड' नामक कम्पनी चलाते थे, जो संघनित (कम्प्रैस्ड) हवा बनाती और बेचती थी।

संघनित हवा वह होती है जिसे भारी दबाव डाल कर सघन किया जाता है और किसी पात्र में भर दिया जाता है। वैसे तो हवा दुनिया भर में स्वच्छन्द बहती-घूमती है। पर दबाव डालने पर काफी मात्रा में हवा को किसी छोटे-से टैंक में भरा जा सकता है।

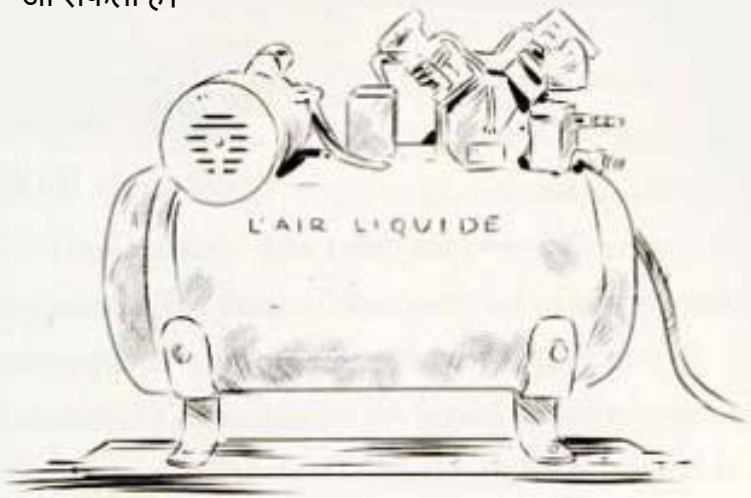

ज़ाक को सूझा कि शायद किसी दिन मिस्टर मैल्क्योर की संघनित हवा का इस्तेमाल पानी के नीचे सांस लेने के लिए भी किया जा सके। ऐसा करना खोखले सरकंडों से तो बेहतर ही होगा।

मिस्टर मैल्क्योर की सत्रह वर्षीय बेटी सिमोन दक्षिणी फ्रांस और जापान में पली-बढ़ी थी। वह फर्राटेदार फ्रेंच और जापानी बोल सकती थी। उसके दादा, नाना और परदादा सभी नौसेना में एडमिरल रह चुके थे। वह अपनी ज़िन्दगी समुद्र में मज़ेदार कारनामे करते गुज़ारना चाहती थी। जब ज़ाक और सिमोन पहली बार मिले उनमें खास बातचीत नहीं हुई। पर वे जल्द ही फिर मिलने वाले थे।

इधर फ्रांस लौटने के बाद ज़ाक ने नौसेना के उड़न दस्ते में तबादला चाहा। वह पायलट बनना चाहता था।

ज़ाक को उड़ना बेहद पसन्द था। वह आसमान में काफी ऊपर से धरती की तस्वीरें खींचा करता था। छह महीने में ज़ाक ने अपना प्रशिक्षण और पढ़ाई लगभग पूरी कर ली।

पर 1936 की एक बरसाती रात कुछ भयानक घटा। ज़ाक ने अपने पिता की स्पोर्टस् कार उधार ली थी ताकि पहाड़ों में हो रही अपने एक दोस्त की शादी में शामिल हो सके। घुमावदार पहाड़ी सड़क के एक पैने मोड़ पर गाड़ी की सामने वाली बत्तियाँ अचानक गुल हो गईं।

ज़ाक गाड़ी समेत एक गड्ढे में जा गिरा। गनीमत से सड़क सूनसान थी, नहीं तो कोई गाड़ी उसे कुचल भी सकती थी। पर इसका मतलब यह भी था कि उसकी मदद के लिए कोई रुकने वाला भी वहाँ नहीं था।

ज़ाक को लगा कि उसका दम वहीं टूट जाएगा। पर अपने दर्द के बावजूद वह लड़खड़ाता-घिसटता किसी तरह पास के एक घर तक पहुँचा। आखिरकार जब वह अस्पताल पहुँचा डॉक्टरों ने कहा कि उसके हाथ बुरी तरह ज़ख्मी हो चुके हैं। दरअसल उसके हाथों की हड्डियाँ कई जगहों से टूट चुकी थीं। एक हाथ तो संक्रमित हो चुका था। डॉक्टर उस हाथ को काट देना चाहते थे, ताकि संक्रमण और न फैले।

पर ज़ाक ने साफ मना कर दिया। उसने कहा कि दोनों हाथ न हों तो उसके लिए मरना ही बेहतर होगा।

कई महीनों के दर्दनाक शारीरिक उपचार के बाद आश्चर्यजनक तरक्की नज़र आने लगी। पर उसका एक हाथ आजीवन मुड़ा-तुड़ा ही रहा।

ज़ाहिर था कि पायलट बनने का ज़ाक का सपना दफन हो चुका था।

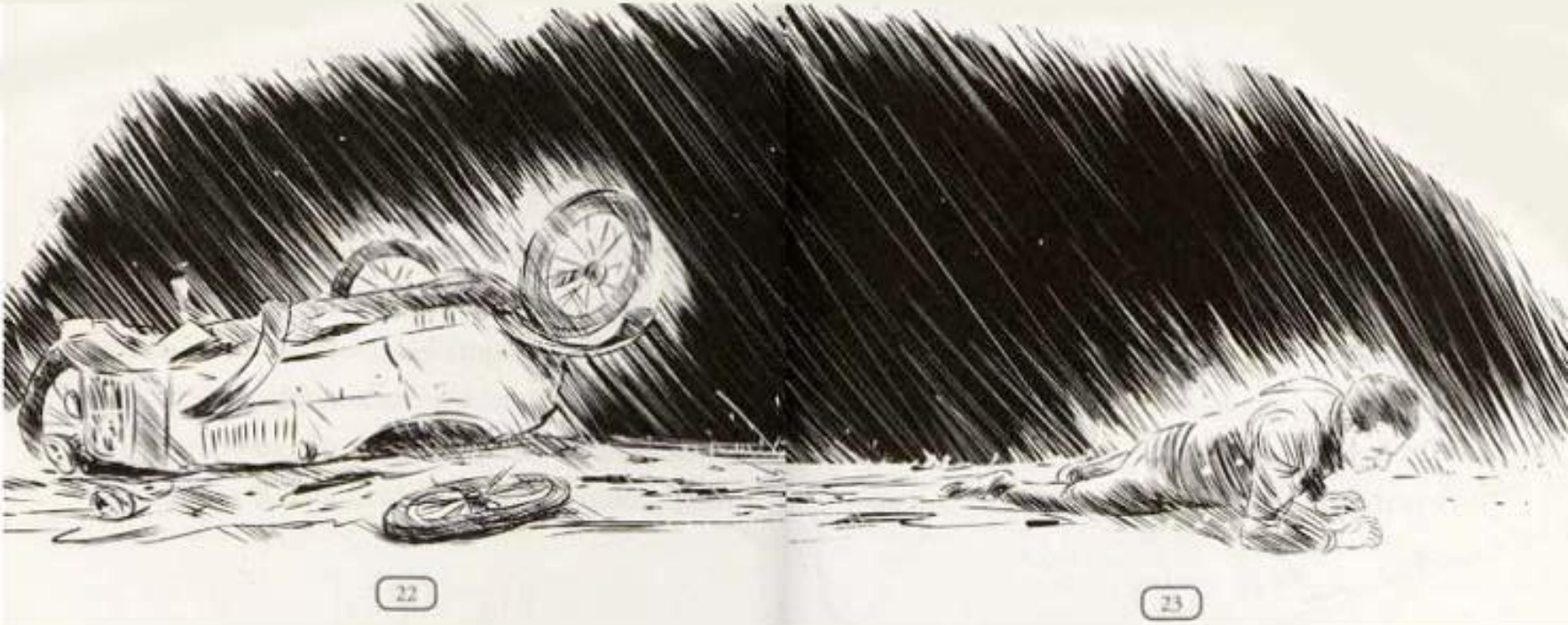

अध्याय 3

# सी मस्केटीयर्स्

दुर्घटना से उबर कर स्वस्थ होने के लिए छब्बीस वर्षीय ज़ाक कई महीनों तक पेरिस में अपने परिवार के साथ रहा। उसी दौरान एक रात वह हैनरी मैक्लेयर के घर एक दावत में गया। उसका कैमरा चल रहा था, उसी के लैन्स से उसे कमरे के दूसरे छोर पर सुनहले बालों वाली एक खूबसूरत युवती नाचती दिखी। यह सिमोन थी। ज़ाक और सिमोन उस रात कई घंटों तक बतियाते रहे। वे एक-दूसरे के प्रति आकर्षित हुए।

जब नौसेना ने यह तय किया कि ज़ाक इतना स्वस्थ हो चुका है कि वह काम पर लौट सकता है तो उसे टुलॉन स्थित नौसेना अड्डे पर जाने का आदेश मिला। पर सिमोन से उसका रिश्ता खत्म नहीं हुआ। वह अक्सर उससे मिलने टुलॉन आने लगी। दोनों समुद्र में तैरने जाते। उन्हें एक-दूसरे से प्यार हो गया था।



साल भर बाद, 1937 में ज़ाक और सिमोन का विवाह हुआ। दूल्हा-दुल्हन तलवारों के तोरण के बीच से गुज़रे। नव-विवाहित जोड़ा दक्षिण को लौटा और टुलॉन अड्डे से छह मील दूर समुद्र तट पर बस गया। अगले ही बसन्त उनके बेटे ज़्याँ मिशेल का जन्म हुआ।

टुलॉन नौसेना अड्डे पर ज़ाक तोपखाना निर्देशक के पद पर भेजा गया था। उसने अपनी शारीरिक थेरेपी (वर्जिश आदि) जारी रखी, पर तकलीफ अब तक भी जारी थी। इसके बावजूद ज़ाक ने दर्द की गोलियों से इन्कार किया। वह जल्दी ही थक भी जाता था। 1936 की पतझड़ में ज़ाक से उम्र में कुछ बड़े अफसर फिलिप तालियेज़ ने सुझाया कि उसे भूमध्यसागर में तैरना चाहिए। यह उसके लिए फ़ायदेमन्द रहेगा। जितनी वर्जिश वह नौसेना के अस्पताल में करता था उसकी तुलना में तैरना कम तकलीफदेह रहेगा।

सो एक दिन काम के बाद दोनों चट्टानों के साये में समुद्र में तैरने गए। तालियेज़ ने सही कहा था!

ज़ाक को सागर में तैरना सचमें अच्छा लगा। दोनों अफसरों में दोस्ती हुई और वे काम के बाद नियमित रूप से तैरने जाने लगे। जितना ज़ाक तैरता, उतना ही मज़बूत उसका शरीर बनता गया।

ज़ाक सागर में तैर कर अपना व्यायाम करता था और तालियेज़ पानी की सतह के नीचे बरछी से मच्छीमारी करता था। तालियेज़ ऐसा करते वक्त गॉगल्स् पहनता, आरी के पतरों को रबर से जोड़ बने फिन पाँवों में बांधता और प्लास्टिक के पाइप के एक टुकड़े को अंग्रेज़ी के अक्षर 'जे' के आकार में मोड़ कर बनाए गए स्नॉर्केल (सांस लेने की नली) का इस्तेमाल करता था। कभी-कभार पकड़ी हुई मछलियों को चट्टानी तट पर ही भून, ज़ाक के साथ बांट कर खाता था।

एक दिन तैरते वक्त उसने अपने गॉगल्स्, स्नॉर्केल और फिन ज़ाक को उधार दिए। इन उपकरणों से ज़ाक का जीवन हमेशा के लिए बदल गया।

तैरते वक्त अपने से नीचे दिख रहे नज़ारों ने ज़ाक को अचरज से भर दिया: शैवाल, समुद्री घास और खरपतवार के जंगल। पहले कभी न देखी रंग-बिरंगी मछलियाँ। हर चट्टान पर पसरी तारा-माछ। ज़ाक को समुद्री अर्चिन की बारीक बैंजनी नसें तक साफ नज़र आ रही थीं!



तब ज़ाक ने पलट कर ज़मीन की ओर नज़र घुमाई, जहाँ लोगों की भीड़-भाड़, धड़धड़ाती मोटर गाड़ियाँ, बिजली के खम्भे दिखे। उसने एक बार फिर से पानी की सतह से बीस फीट नीचे उस मोहक दृश्य पर नज़र दौड़ाई, जिसके अस्तित्व से वह अब तक वाकिफ़ ही नहीं था।

जैसे बचपन में ग्रीष्म शिविर के दौरान झील में तैरने को लेकर हुआ था, ठीक उसी तरह ज़ाक को एक बार फिर चस्का लग गया।

तालियेज़ ने ज़ाक को अपने दोस्त फ्रैडरिक डूमास से मिलवाया, जो 'डीडी' नाम से जाना जाता था। डीडी कुशल गोताखोर था, वह देर तक अपनी सांस रोके रख सकता था और गोता लगा पैंसठ फीट नीचे तक पहुँच सकता था। वह बरछी से मछलियाँ पकड़ने में भी उस्ताद था। एक दिन बाज़ी लगी और उसने दो घंटों में बरछी से 280 पाउण्ड मछलियाँ पकड़ लीं।

अब ये तीनों कभी न जुदा होने वाले दोस्त बन गए। वे ख़ुद को 'थ्री मस्केटियर्स' की तर्ज पर, 'सी मस्केटियर्स' कहने लगे। ज़ाक उनका अघोषित कप्तान था। वह लगातार गोताखोरी के उपकरणों को, सुधारने, बेहतर बनाने की जुगत भिड़ाता रहता था जैसे सुरक्षा सूट ताकि उनका शरीर गरम रहे, वज़नदार बेल्ट ताकि अधिक गहराई तक गोता लगाया जा सके। सिमोन सी मस्केटियर्स की मानद सदस्या थी। वह भी तीनों दोस्तों के साथ गोताखोरी करने जाती। तब भी जब ज्याँ मिशेल गर्भ में था।

सी मस्केटियर्स एक-दूसरे को अपनी हदों के परे जाने को उकसाते - गोता लगा ज़्यादा गहराई तक जाने, या ज़्यादा देर तक सांस रोके रखने को प्रेरित करते। ज़ाक की ताकत बढ़ने लगी और जल्द ही वह भी एक सांस खींच पचास या साठ फीट तक गोता लगाने लगा।

सामान्य लोगों के लिए यह सब करना बेहद ख़तरनाक होता। पर ज़ाक और सी मस्केटियर्स अपने शरीर को पेशेवर एथलीटों की तरह प्रशिक्षित कर रहे थे। वे किसी स्पर्धा में जीतना नहीं चाहते थे। वे तो वह बनना चाहते थे जिसे ज़ाक 'नर माछ' कहता था।



अध्याय 4

# पानी के नीचे सांस लेना

एक असली 'नर माछ' बन पाने के लिए और समुद्र तल की दुनिया को ठीक से देख-समझ पाने के लिए ज़ाक को सतह के नीचे एक सांस के सहारे जितनी देर रुका जा सकता है उससे ज़्यादा समय की दरकार थी। सो उसने प्रयोग के बतौर एक बार एक गैस मास्क का उपयोग किया जो सतह पर तिरते ऑक्सीजन के टैंक से जुड़ा था।

ज़ाक यह जानता था कि ज्यादा गहराई में ऑक्सीजन लेने से वह ज़हरीला हो जाता है। पर पानी के नीचे सांस लेने की उस वक्त यही एकमात्र उपलब्ध तकनीक थी। सो ज़ाक यह जाँचना चाहता था कि यह तब्दीली कितनी गहराई पर आती है। पानी के नीचे कुछ देर रहने के बाद ही ज़ाक को दौरा पड़ा। उसके होंठ थरथराने लगे, उसकी रीढ़ की हड्डी उलटने लगी। उसने अपना वज़नदार बैल्ट उतार फेंका ही था कि वह बेहोश हो गया, उसी हाल में उसका शरीर सतह पर उठ आया और तिरने लगा।

## ऑक्सीजन विषाक्तता

जैसे-जैसे व्यक्ति पानी में अधिक गहरे गोता लगाता है, शरीर पर पानी का दबाव बढ़ता जाता है। जब आप स्विमिंग पूल के गहरे छोर पर गोता लगाते हैं तो आपके कान फटकते हैं। ऐसा पानी के दबाव से होता है।

भारी दबाव से शुद्ध ऑक्सीजन खून में मौजूद ऑक्सीजन को ज़हरीला या विषाक्त बना देता है। इससे व्यक्ति को संभ्रम होता है, सांस लेने में या देखने में दिक्कत का अनुभव हो सकता है। इसे ही ऑक्सीजन विषाक्तता कहते हैं।

दूसरी बार इसी प्रयोग को दोहराने पर ज़ाक पानी की सतह से पैंतालीस फीट नीचे पहुँचा और तब ठीक वही हुआ जो पिछली बार हुआ था।

अब ज़ाक जान चुका था कि कितनी गहराई तक गोता लगाने पर ऑक्सीजन विषाक्त हो जाता है। सो वह इस खतरनाक प्रयोग को दोहरना नहीं चाहता था। उसने तय किया कि वह आगे से ऑक्सीजन टैंक का इस्तेमाल नहीं करेगा।

अब ज़ाक ने अपना ध्यान पानी के नीचे अपने कैमरे को सुरक्षित रखने के तरीकों पर लगाया। उसने काँच का मर्तबान लिया। अपने कैमरे को चालू कर मर्तबान में लगी टेक के सहारे ऐसे रखा कि वह जगह से न हिले, तब मर्तबान का ढक्कन ठीक से बंद कर दिया कि पानी अन्दर न घुसे।

1938 की बसन्त में ज़ाक का पहला अंतर्जलीय कैमरा तैयार था। उसे जाँचने के लिए वह तल तक गया और वहाँ से कैमरा सिमोन की ओर किया, जो सतह पर तैर रही थी। यह प्रयोग सफल रहा।

अब लहरों के नीचे जितनी देर संभव हो उतनी देर टिके रहने के ज़ाक के पास और भी कारण थे। वह उन तमाम खूबसूरत चीज़ों की कल्पना करने लगा जिन्हें वह फिल्म में दर्ज कर सकता था, बशर्ते वह देर तक नीचे रह सके।

ज़ाक ने नौसेना के पुस्तकालय में गोताखोरी का अध्ययन शुरू किया। उसने प्राचीन यूनानियों के बारे में पढ़ा जो चौथी सदी ईस्वी में गोताखोरी के घंटों (डाइविंग बैल) का इस्तमाल करते थे। यह उपकरण इतना बड़ा होता था कि उसमें व्यक्ति समा सके। उसने खोखले सरकंडों के सहारे सांस लेते यूनानी सैनिकों का रेखाचित्र देखा, जो दुश्मनों के जहाज़ के पेंदे पर छेद कर रहे थे। उसने गोताखोरी के हैलमेट और जलरोधी सूट पहने लोगों की हालिया तस्वीरें भी देखीं।

पर ज़ाक को ये सारे उपकरण पसन्द नहीं आए।

1930 के दशक में गोताखोर पानी के नीचे सांस लेने के लिए संघनित हवा का इस्तेमाल करने लगे थे। पर पानी के भारी दबाव के कारण उन्हें हवा के बहाव को हाथों से नियंत्रित करना पड़ता था। ऐसा न करने पर हवा टैंक से बेहद तेज़ रफ्तार से निकल सकती थी।

ज़ाक को लगा कि हवा की मात्रा को नियंत्रित रखने के लिए एक 'डिमांड रेग्युलेटर' होना चाहिए। मतलब ऐसा उपकरण जो हरेक सांस के लिए हवा की आवश्यक मात्रा को ही गोताखोर के मुँह में रखे सिरे से अन्दर जाने दे।

ज़ाक एक मछली की तरह ही आज़ादी से तैरना चाहता था, सतह पर किसी चीज़ से बंधे बिना। वह नीचे भी उसी तरह सांस लेना चाहता था जैसे ऊपर ज़मीन पर ले सकता था, बिना हवा पहुँचाने वाले वाल्व को खोले और बन्द किए।

ज़ाहिर था कि 'नर माछ' बनने के अपने सपने को हासिल करने के लिए उसे कुछ नया ईजाद करना था।



**अध्याय 5**

# युद्धरत फ्रांस

सितम्बर 1939 में जर्मनी ने पोलैण्ड पर हमला किया। दो दिन बाद ही फ्रांस और ब्रिटेन ने जर्मनी के खिलाफ़ जंग का ऐलान कर दिया। द्वितीय विश्व युद्ध आरंभ हो चुका था।

सी मस्केटियर्स को जुदा होना पड़ा। तालियेज़ को फ्रांस के दूसरे हिस्से में बुला लिया गया। डीडी पहाड़ों पर खच्चरों के साथ जाने वाली सैन्य टुकड़ी में शामिल हुआ।

ज़ाक के टुलॉन स्थित नौसेना जहाज़ में युद्ध का अभ्यास तो अक्सर होता रहा पर उसे कहीं और भेजा नहीं गया। इधर भूमध्य सागर में जर्मन पनडुब्बियाँ गश्त लगाती रहीं। उन्होंने समूचे तट पर विस्फोटक बिछा दिए।

एक बार ब्रिटिश टॉरपीडो जहाज़ के प्रौपेलर (पंखे) स्टील के मोटे तार में उलझ गए, तब ज़ाक और उसके चार कर्मियों ने गोता लगा, सांस रोके रख कर उन तारों को आरियों से काटा।

बेशक इस काम में घंटों लगे, थकान से उनका दम भी निकला। पर आखिरकार प्रौपेलर मुक्त हो गए। इस घटना से ज़ाक का यह विश्वास और भी पुख्ता हो गया कि पानी के नीचे सांस ले पाने का तरीका तलाशना कितना ज़रूरी है।

जून 1940 में जर्मनी ने पेरिस पर हमला कर दिया। कुछ ही दिनों में जर्मनी के मित्र देश इटली ने भी फ्रांस के खिलाफ़ जंग छेड़ दी और टुलॉन पर बमबारी शुरू कर दी। फ्रांस की सरकार ने समर्पण कर दिया। अब फ्रांस जर्मनी के अधीन था।

ज़ाक फ्रांसीसी प्रतिरोध (रेसिस्टेन्स) का हिस्सा बना, जो जर्मनी द्वारा फ्रांस पर कब्ज़े के विरुद्ध भूमिगत आन्दोलन था। ज़ाक ने फ्रांसीसी जहाज़ों में विस्फोटक लगाए ताकि अगर जर्मन सेना उनका उपयोग करे तो उन्हें डुबाया जा सके।



ज़ाक ने फोटो खींचने के अपने शौक का भी बेहतरीन उपयोग किया। उसने एक चुराई हुई वर्दी पहन इतालवी अफसर होने का नाटक किया और चार घंटे इतालवी सेना के एक दफ्तर में बिताए। इस दौरान उसने उनके खुफ़िया नक्शों ओर दस्तावेजों के फोटो खींचे।

उस दिसम्बर ज़ाक और सिमोन के दूसरे बेटे का जन्म हुआ। उन्होंने उसका नाम अपने प्यारे दोस्त फिलिप तालियेज़ के नाम पर फिलिप रखा। सिमोन, फिलिप और ज्यां मिशेल के साथ टुलॉन से दूर पहाड़ों पर रहने चली गई। ज़ाक उनसे मिलने जाता रहा। यह समय कुस्टो परिवार और समूचे फ्रांस के लिए बेहद कठिन था।

अध्याय 6

# आक्वा लंग

1942 में ज़ाक का तबादला मार्से के नौसेना अड्डे पर हुआ जो दक्षिणी फ्रांस में था। वहाँ जर्मन और इतालवी सैनिक सड़कों और समुद्र तट पर गश्त लगाया करते थे। इधर फ्रांस इस इन्तज़ार में था कि ब्रिटेन, अमरीका और सोवियत रूस उनके देश को आज़ाद करेंगे।



उस बसन्त ज़ाक ने मार्से की एक कबाड़ी की दुकान से एक 35 मिलीमीटर का मूवी कैमरा ख़रीदा। अपने एक दोस्त की मदद से उसने अपने कैमरा के लिए धातु, रबर और काँच का एक जल-रोधक केस बना डाला।

उस वक्त 35 मिलीमीटर ही सबसे बड़ी आकार की उपलब्ध फिल्म हुआ करती थी। अगर ज़ाक अपने प्रयोग में सफल होता तो वह पानी के नीचे की अब तक की सबसे साफ छवियाँ उतार सकता था।

सी मस्केटियर्स एक बार फिर साथ हो सके और ज़ाक काम पर लग गया। उसने तय किया कि वह बरछी से मछलियाँ पकड़ते अपने दोस्तों की एक फिल्म बनाएगा।

गर्मियों भर ज़ाक गोता लगाता और तब अपनी सांस थामे रहता ताकि सही शॉट ले सके। आखिरकार अक्तूबर में उसकी फिल्म पूरी हुई। उसने अपनी फिल्म का शीर्षक रखा *'एट्टीन मीटर्स् डाउन'* यानी अठारह मीटर नीचे।

काश ज़ाक पानी के नीचे ज़्यादा देर रह पाता तो उसकी छवियाँ चन्द सैकण्डों से अधिक लम्बी हो सकतीं। सिमोन के

पिता ने ज़ाक का परिचय एयर लिक्विड के इंजीनियर इमील गैगनन से करवाया। इमील पहले से ही उस उपकरण पर काम कर रहा था जिसकी ज़ाक को ज़रूरत थी। दिसम्बर 1942 में वे दोनों पेरिस में मिले ताकि पानी के नीचे हवा की मात्रा को नियंत्रित करने के लिए 'रेग्युलेटर' विकसित कर सकें।

उनका बनाया पहला मॉडल नाकाम रहा। जब ज़ाक ने पेरिस के बाहर एक नदी में उसका परीक्षण किया तो पता चला कि सही मात्रा में हवा पाने के लिए ज़ाक को बिलकुल सपाट रहना पड़ रहा था।



पर प्रयोगशाला लौटते समय ही दोनों को इसका समाधान भी सूझ गया। उनकी दूसरी कोशिश सफल रही!

गैगनन और कुस्टो ने इस उपकरण के पेटेन्ट के लिए आवेदन किया। उन्होंने अपने इस आविष्कार को 'आक्वा लंग' (यानी जल फेंफड़ा) नाम दिया। पर अंत में यह सैल्फ कन्टेन्ड अण्डरवॉटर ब्रीदिंग एपरेटस या संक्षेप में 'स्कूबा' नाम से विख्यात हुआ।

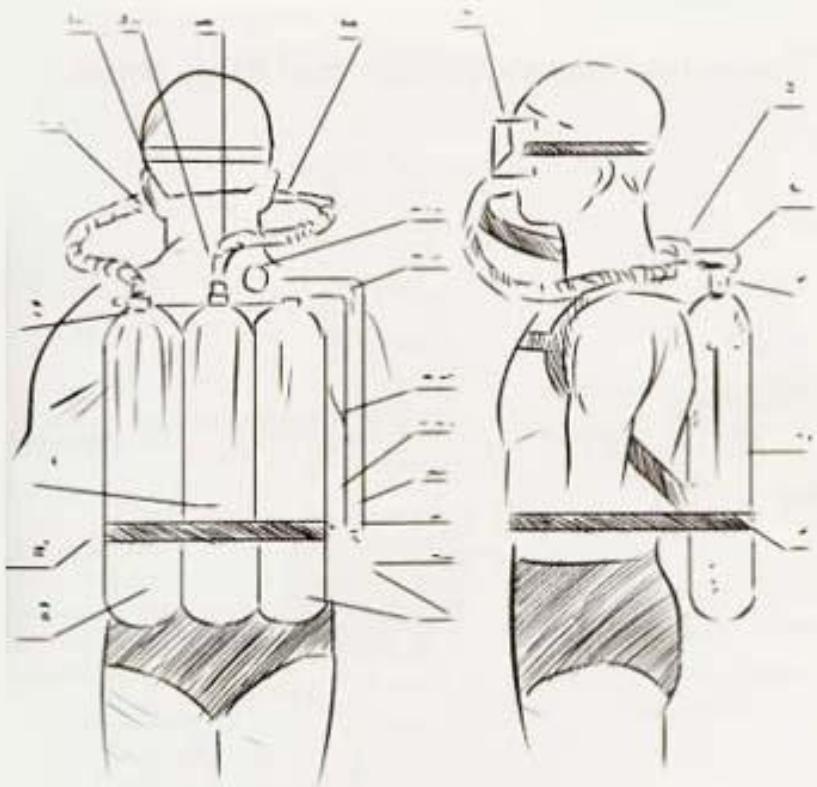

ज़ाक दक्षिणी फ्रांस लौटा। उस गर्मी के महीनों में कुस्टो परिवार और सी मस्केटियर्स ने समुद्र तट पर एक मकान किराए पर लिया। ज़ाक बेताबी से अपने आक्वा लंग के पहुँचने का इन्तज़ार कर रहा था। जून में एयर लिक्विड के इंजीनियरों ने पहला आधिकारिक आक्वा लंग डब्बे में बन्द कर ज़ाक को भिजवाया।

ज़ाक ने इतालवी सैनिकों की नज़रों से दूर एक छिपी हुई छोटी खाड़ी में उसका परीक्षण किया।

सिमोन ने मास्क और स्नॉर्केल पहने और ज़ाक के साथ तैर कर आगे बढ़ी। वह सतह पर ही रहने वाली थी और ऊपर से ही ज़ाक पर नज़र रखने वाली थी। मुश्किल होते ही उसे तट पर तैनात डीडी को इशारा करना था, ताकि वह फौरन मदद को आ सके।

जिस पल की कल्पना ज़ाक एक अर्से से करता रहा था वह आखिरकार आ गया था। आक्वा लंग ने सही तरीके से काम किया। अब ज़ाक 'नर माछ' की तरह आसानी से तैर सकता था। वह पानी में उलटा-पलटा, उसने गुलामाटियाँ लगाईं। हंसते हुए अपनी एक ऊंगली तल पर टिका वह उलटा खड़ा हुआ। उसने सिमोन को देख हाथ हिलाया। उसने भी जवाब में हाथ हिलाया। और इन तमाम कारगुज़ारियों के दौरान एक भी बार हवा का बहाव बाधित नहीं हुआ।

ज़ाक का साहस बढ़ा। वह पानी के नीचे उस गुफा में घुसा जिसकी छानबीन सी मस्केटियर्स हमेशा से करना चाहते थे। सवाधानी से वह उसकी संकरी सुरंग में घुसा। उसकी छत कांटेदार केंकड़ों से पटी पड़ी थी। उसने दो केंकड़े पकड़े और गुफा से बाहर निकल आया। सिमोन ने भी उससे मिलने के लिए गोता लगाया। ज़ाक ने केंकड़े उसे थमाए तब कुछ और पकड़ने वापस लौट गया।

सिमोन ऊपर आई उसने केंकड़े चट्टान पर रखे जिससे एक स्थानीय मछुआरा अचम्भे में पड़ गया। सिमोन ने गुज़ारिश की कि वह उन पर नज़र रखे ताकि वह और केंकड़े ला सके। यह सुन मछुआरे के हाथों से उसकी मछली पकड़ने की बंसी ही छूट गई।

घर वापस लौट सबने केंकड़ों की दावत खाई और आक्वा लंग की योजना पर चर्चा की। अगले महीने पेरिस से दो और बक्से आ पहुँचे। सी मस्केटियर्स उन्हें पहनने को बेताब थे।

उन गर्मियों में त्रिमूर्त्ति ने अपने-अपने आक्वा लंग पहन 500 बार गोताखोरी की। इसके पहले जब वे सांस रोक कर जितने नीचे तक जा सकते थे उससे कहीं ज़्यादा गहराई तक वे गए। दरअसल वे अपने उपकरण और अपने शरीर दोनों की हदों को जाँच-परख रहे थे।

सी मस्केटियर्स ने डूबे हुए जहाज़ों की छानबीन की, जो समुद्री खरपतवार और पैने शंबुकों (मसल्स्) से ढ़के थे। डीडी को एक जहाज़ में कप्तान का रिहाइशी कमरा दिखा। वह उसके टब में नहाने का नाटक करते हुए इतना हंसा कि उसके मुँह से हवा की नलकी लगभग छूटने को हो आई।

ज़ाक इस सबको लगातार अपने कैमरा में रिकॉर्ड करता रहा।

ज़ाक ने अपनी खींची फिल्म के कुछ अंश फ्रांस की नौसेना के एडमिरलों को दिखाए। उन्होंने फौरन ही नौसेना के लिए दस आक्वा लंग की मांग की।

सालों बाद ज़ाक की फिल्म *'शिपरैक्स'* (भग्न जहाज़) ने कान्स फिल्मोत्सव में दर्शकों की वाहवाही लूटी। कान्स फिल्मोत्सव अब दुनिया के प्रतिष्ठित फिल्म उत्सवों में एक है।



**अध्याय 7**

# हदों को धकेलना

6 जून 1944 को, जो 'डी डे' (आक्रमण दिवस) कहलाता है - मित्र राष्ट्रों की सेनाएं उत्तरी फ्रांस में नॉरमैन्डी के तट पर उतरीं। उन्होंने जर्मन सैनिकों को फ्रांस से बाहर खदेड़ना शुरू किया।

सितम्बर में मित्र राष्ट्रों के और भी सैनिक दक्षिणी फ्रांस पहुँचे। मार्से और टुलॉन आज़ाद हुए। साल खत्म होने तक समूचा फ्रांस मुक्त हो गया। अप्रेल 1945 में यूरोप में युद्ध समाप्त हो गया।

ज़ाक अब नौसेना के लिए दफ्तरी काम कर रहा था। तालियेज़ को वन रक्षक के पद पर भेज दिया गया था। ज़ाक इससे नाखुश था। उसने किसी तरह नौसेना को भरोसा दिलाया कि तालियेज़ पानी के नीचे अधिक उपयोगी होगा।

नौसेना की अनुमति से उन्होंने एक समुद्र तल शोध समूह का गठन किया। समूह का उद्देश्य था ऐसी तकनीकें विकसित करना जो गोताखोरी और पानी के नीचे फोटोग्राफी को बेहतर बना सकें। साथ ही समूह को नौसेना के सैनिकों को गोताखोरी का प्रशिक्षण भी देना था।

तालियेज़ और कुस्टो ने डीडी और तीन अन्य लोगों को भी साथ जोड़ा, जिनमें मॉरिस फारगो भी शामिल था। अगले पाँच वर्षों में टुलॉन के घाट पर स्थित समूह के दफ्तर में मशीनों का मरम्म्तघर, एक फोटो लैब, कार्मिकों के लिए रिहाइशी जगह और एक शोध प्रयोगशाला जुड़ते गए। इतना ही नहीं समूह के पास एक समुद्री जहाज़ और दो छोटी नावें भी थीं।

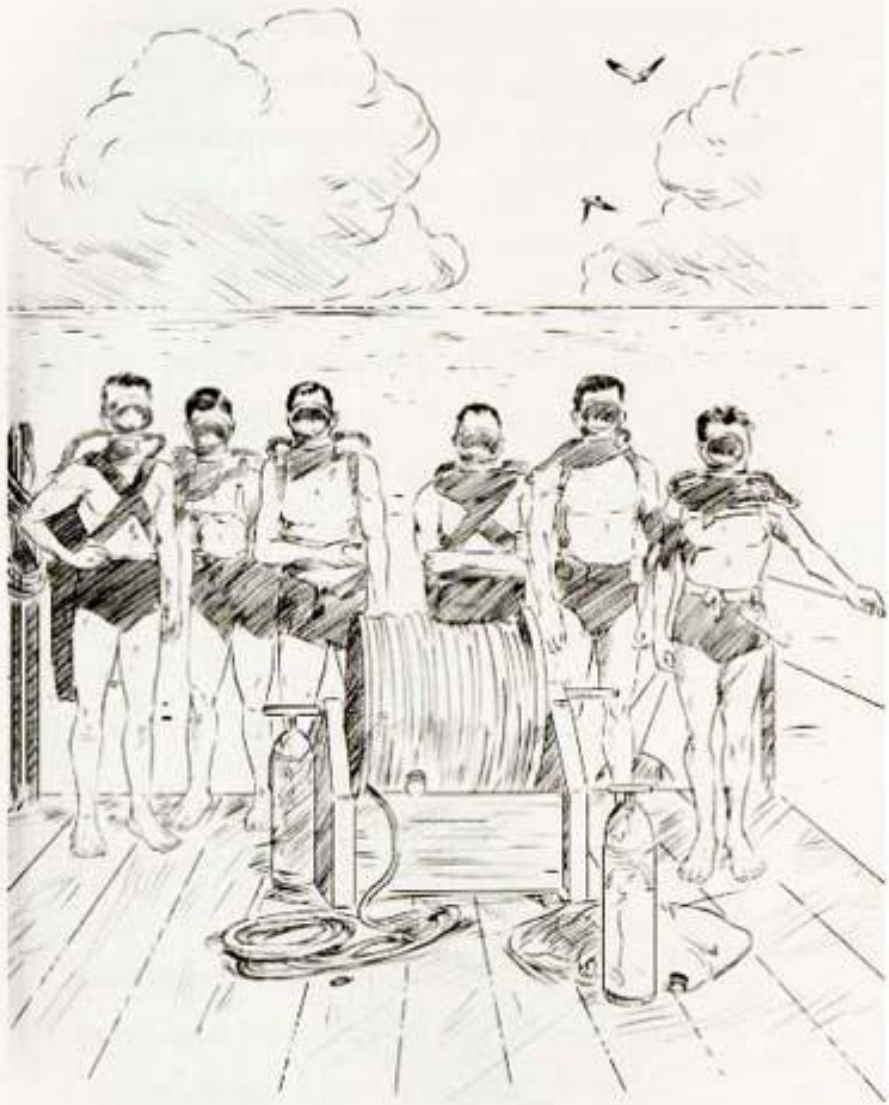

साल भर तक इस समूह ने तट से कुछ ही दूरी पर जर्मन सैनिकों द्वारा पानी के नीचे लगाए गए विस्फोटकों को हटाने का काम किया। साथ ही उन्होंने *'ल रुबिस्'* नामक फ्रांसीसी पनडुब्बी का उस वक्त फिल्मांकन भी किया जब उससे टारपीडो दागने का परीक्षण किया जा रहा था। ज़ाक निडर था। छह फीट की दूरी पर टारपीडो दनदनाते बढ़ रहे होते और वह हाथों में कैमरा लिए सब कुछ फिल्मा रहा होता।

1946 में ज़ाक और डीडी ने एविन्यॉन के निकट प्रसिद्ध वॉक्ल्यूस फव्वारे के पास गोता लगाया। हर मार्च नदी के नीचे एक गुफा से पानी एक विशाल फव्वारे की शक्ल में निकलता था जिससे आस-पास के इलाके में बाढ़ आ जाती थी। ज़ाक जानना चाहता था कि ऐसा क्यों होता है।

पर गुफा के मुँह से चार सौ फीट नीचे ठण्डे स्याह पानी में भारी परेशानी आन खड़ी हुई। डीडी का सूट पानी से भर गया और उसके मुँह से सांस लेने वाली नलकी निकल गई। ज़ाक ने अपने दोस्त का हाथ थामा। ज़ाक के हाथों से मदद के लिए लगाया गया 'गाइड' रस्सा लगभग छूट ही गया था। फिर भी किसी तरह वह डीडी के साथ सतह पर उठ आया। दोनों मौत के मुँह से बालबाल बचे।

ज़ाक के लिए अब वह तरीका तलाशना और ज़रूरी बन गया जिससे गहराई में गोताखोरी करते वक्त सुरक्षित रहा जा सके। भूमध्यसागर में कमर पर रस्सी बांध ज़ाक समुद्र में उतरा। उसने वज़न पेटी बांध रखी थी ताकि वह तेज़ी से नीचे उतर सके। रस्सी पर कुछ-कुछ दूरी पर छोटे-छोटे बोर्ड बंधे थे ताकि ज़ाक को पता रहे कि वह कितनी गहराई तक पहुँचा है। ज़ाक उस दिन 297 फीट तक उतरा, तब उसने वज़न पेटी खोल फेंकी और सतह पर लौट आया।

मॉरिस फारगो और गहराई तक जा सका - तीन सौ पिच्यासी फीट तक। तब नाव पर निगरानी कर रहे लोगों को अचानक रस्सी के झटके महसूस होना बन्द हो गए। उन्होंने तेज़ी से फारगो को ऊपर खींचा। पर फारगो डेढ़ सौ फीट के निशान पर बेजान लटका हुआ था।

फारगो ने बहुत गहरे गोता लगा लिया था। इतनी गहराई में पहुँचने के बाद यह संभावना रहती है कि गोताखोर को खतरों का अंदाज़ ही न लगे। वह धोखे में सांस लेने के यंत्र को हटा दे और डूब जाए। दल के साथियों ने फारगो की चेतना लौटाने की हरचंद कोशिश की पर नाकाम रहे।

ज़ाक और दल के अन्य लोगों को अपने दोस्त और साथी को यों खो देने का बेहद अफसोस हुआ। इस तजुरबे के बाद उन्होंने गोताखोरी की अंतिम हद तीन सौ फीट तय कर दी। यह साफ था कि इससे गहरे उतरना जानलेवा हो सकता था।



**अध्याय 8**

# समुद्री जीवन

कुछ ही वर्षों में आक्वा लंग संयुक्त राज्य अमरीका, कनाडा और यूरोप में बिकने लगा। साहसिक कारनामों के शौकीन लोगों में स्कूबा गोताखोरी लोकप्रिय होने लगी। लोग समुद्र तल में बसी दुनिया के बारे में जानना चाहते थे। 1956 में *लाइफ* पत्रिका ने ज़ाक द्वारा खींचे चित्रों के साथ इस विषय पर सात पन्ने लम्बा एक आलेख छापा।

यों यकायक ज़ाक एक जानी-मानी हस्ती बन गया!

उसने नौसेना से एक अधिक बड़े जहाज़ की मांग की। फ्रांसीसी नौसेना ने कहा कि यह उसे ख़ुद ही ख़रीदना होगा। पर ज़ाक के पास पैसे कहाँ थे। नसीब से 1950 में एक संपन्न ब्रिटिश राजनीतिज्ञ और व्यवसायी ने ज़ाक को 140 फीट लम्बा जहाज़ *कैलिप्सो* खरीदने के लिए अनुदान दिया। *कैलिप्सो* समुद्र यात्रा के लिए ठीक तो था पर उसमें काफी जोड़-तोड़ ज़रूरी था।

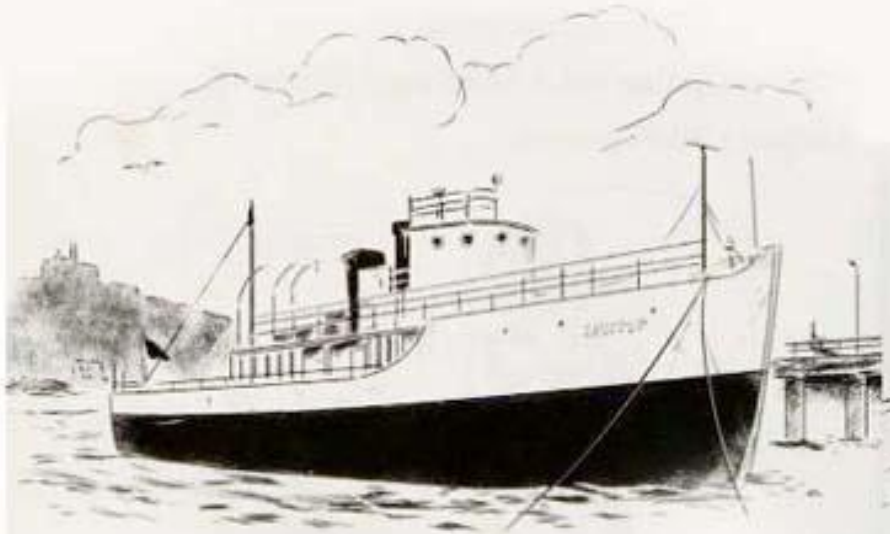

सो कुस्टो परिवार ने अपना मकान बेचा, सिमोन ने अपने मित्रों और रिश्तेदारों से पैसे जुटाने में मदद ली। उसने अपने गहने भी बेच डाले। कुस्टो परिवार *कैलिप्सो* पर रहने चला आया। एक रोमांचक समुद्री जीवन जीने का उनका सपना असलियत में बदल रहा था!

*कैलिप्सो* को एक शोध वाहन में तब्दील कर दिया गया। ऊपर एक अवलोकन 'डैक' था और नीचे अवलोकन कक्ष। जहाज़ के तल में स्टील से बने 'बबल' में अवलोकन के लिए आठ खिड़कियाँ थीं और एक बिस्तर भी। वह इतना बड़ा था कि एक व्यक्ति उस पर पेट के बल लेट सके। फिल्म खींचने के लिए वह बिलकुल सही था।

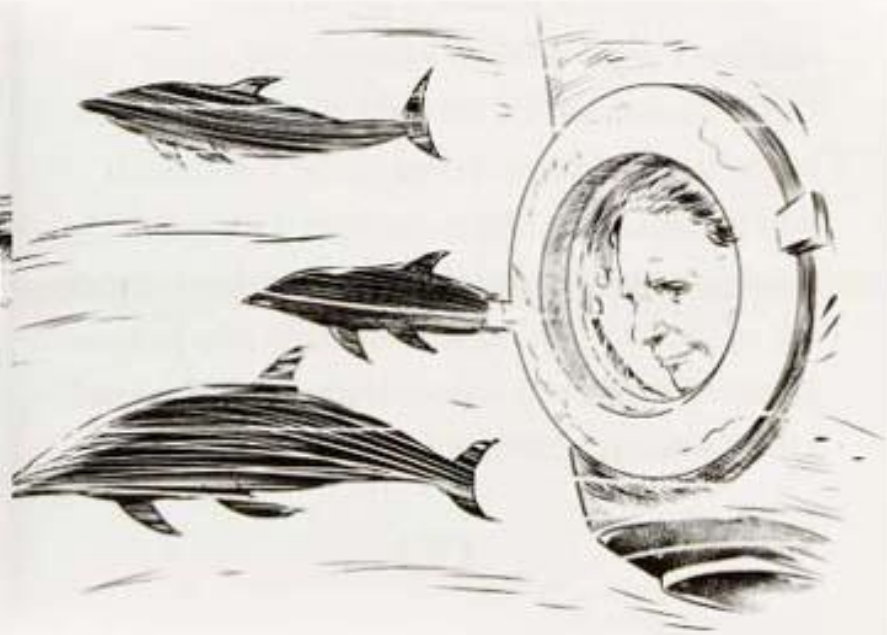

नए सिरे से गढ़े गए *कैलिप्सो* में माल, इंधन, पानी, कार्यशाला, खाद्य सामग्री और वैज्ञानिक सैम्पलों के लिए जगह बनाई गई थी। शराब रखने के लिए 'सैलर' तक था।

ज़ाक ने नौसेना से तीन साल की छुट्टी ली। वह समुद्र तल की छानबीन में जितना हो सके उतना समय बिताना चाहता था। उसने बीस लोगों का एक कर्मी दल इकट्ठा किया, जिसमें नाविक, वैज्ञानिक, फिल्म बनाने वाले और बेशक डीडी शामिल थे। तालियेज़ टुलॉन में बना रहा ताकि वह समुद्रतल शोध समूह का संचालन कर सके। सिमोन भी अपने पति के साथ *कैलिप्सो* में थी, जबकि दोनों बेटे ज्याँ मिशेल और फिलिप छात्रावास में रहे। पर वे अपनी छुट्टियाँ *कैलिप्सो* पर ही बिताते थे।

24 नवम्बर 1951 को *कैलिप्सो* अपने पहले अभियान पर निकला। अभियान लाल सागर की दिशा में बढ़ा, जो अफ्रीका और एशिया के बीच स्थित है और हिन्द महासागर तक जाता है। ज़ाक लाल सागर को मज़ाक में शार्क मछलियों का गरमागरम 'बाथटब' कहता था। सफर शुरू होने के पहले वाली रात को अपने कर्मी दल के साथ जामे-सलामती उठा ज़ाक ने कहा 'ईल फो ऑले ववार' यानी हमें खुद जाकर देखना चाहिए।



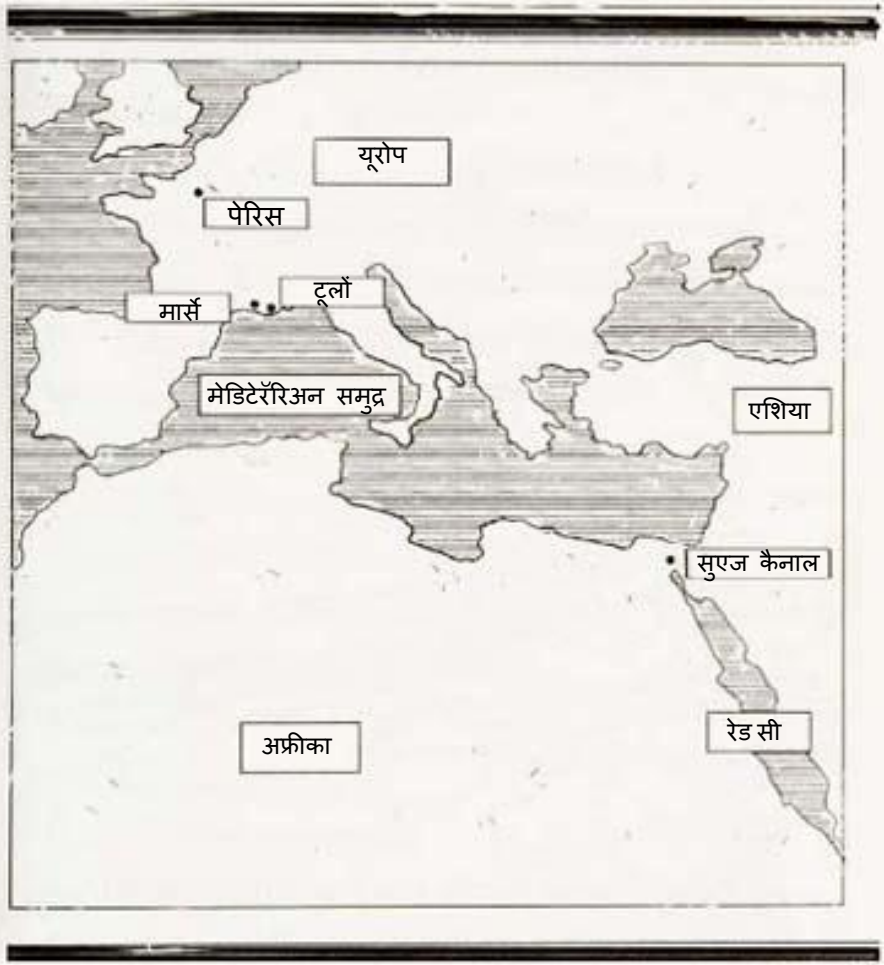


माह भर लम्बे इस समूचे सफर को फिल्म में दर्ज किया गया।

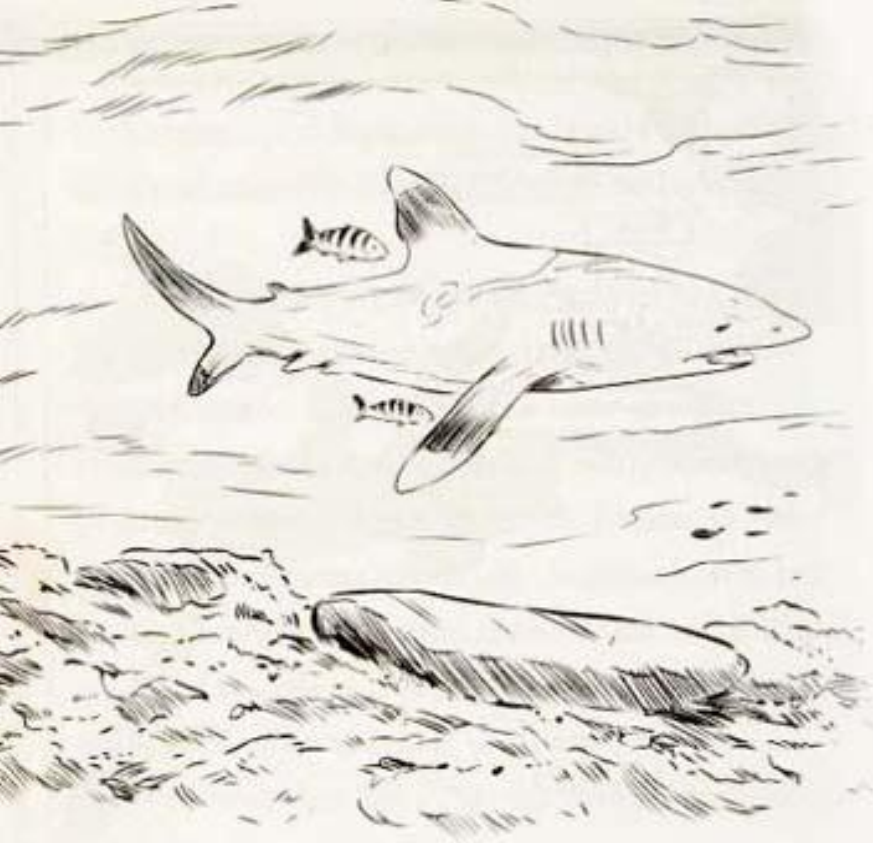

ज़ाक ने शार्क मछलियों को, दमकती मूंगे की चट्टानों को फिल्माया। समुद्री जीवों की नई प्रजातियों को खोज निकाला। समुद्र के तल में उन नए इलाकों की पहचान की जिनमें पेट्रोल मौजूद था। अलग-अलग गहराइयों पर पानी के नमूने इकट्ठा किए ताकि जहाज़ पर मौजूद वैज्ञानिक उनका अध्ययन कर सकें।



अभियान को ज़बरदस्त सफलता हासिल हुई, यह अनेक भावी सफलताओं में पहली थी।

1952 में *कैलिप्सो* ने मार्से के तट से कुछ ही दूरी पर दो हज़ार साल से भी पहले डूबे एक यूनानी जहाज़ को खोद निकाला। ज़ाक ने टुलॉन में समुद्रतल प्रौद्योगिकी का दफ्तर स्थपित किया ताकि समुद्र में गोताखोरी के उपकरण और तकनीकों को ईजाद किया जा सके, उन्हें सुधारा जा सके।

1953 में ज़ाक की पहली किताब प्रकाशित हुई। डीडी के साथ लिखी *द साइलैन्ट वर्ल्ड* में आक्वा लंग के विकास और समुद्र तल शोध समूह के रोमांचक अभियानों का वर्णन था। पुस्तक को *न्यू यॉर्क टाइम्स* की 'बेस्ट सैलर' सूची में स्थान मिला और साल के अंत तक उसकी पाँच लाख प्रतियाँ बिक गईं। अंततः इसका अनुवाद बीस से अधिक भाषाओं में हुआ और उनकी पचास लाख प्रतियाँ बिकीं।

1954 ने एक पैट्रोल कम्पनी ने ज़ाक को अरब खाड़ी में तेल भण्डार तलाशने के लिए पैसे दिए। सतह से 150 फीट नीचे चट्टानों को खोदना आसान काम न था। कर्मी दल को ज़हरीले समुद्री साँपों के झुण्डों पर भी नज़र रखनी पड़ती थी। ज़ाक को इस तरह का काम नापसन्द था पर *कैलिप्सो* पर होने वाले खर्च के लिए उसे पैसों की सख्त ज़रूरत थी।

ज़ाक समुद्र तल की दुनिया पर एक लम्बी और पहली रंगीन फिल्म बनाना चाहता था। सो उसने नए प्रकाश उपकरण और कैमरे खरीदे। एक सह-निर्देशक को जोड़ा और *कैलिप्सो* को एक तैरते फिल्म स्टूडियो में तब्दील कर डाला।

भूमध्य सागर के आर-पार का वह जाना-पहचाना सफर मानो एक शानदार 'पार्टी' में तब्दील गया। लाल सागर के रास्ते में कर्मी दल डैक पर ताश खेलते, धूप सेंकते और देर तक चलने वाले रात्रि भोज करते, जिसमें उम्दा बातचीत और शराब के दौर चला करते। जहाज़ पर एक कुत्ता भी था। डाकस्हुण्ड प्रजाति के इस कुत्ते का नाम बुले था।

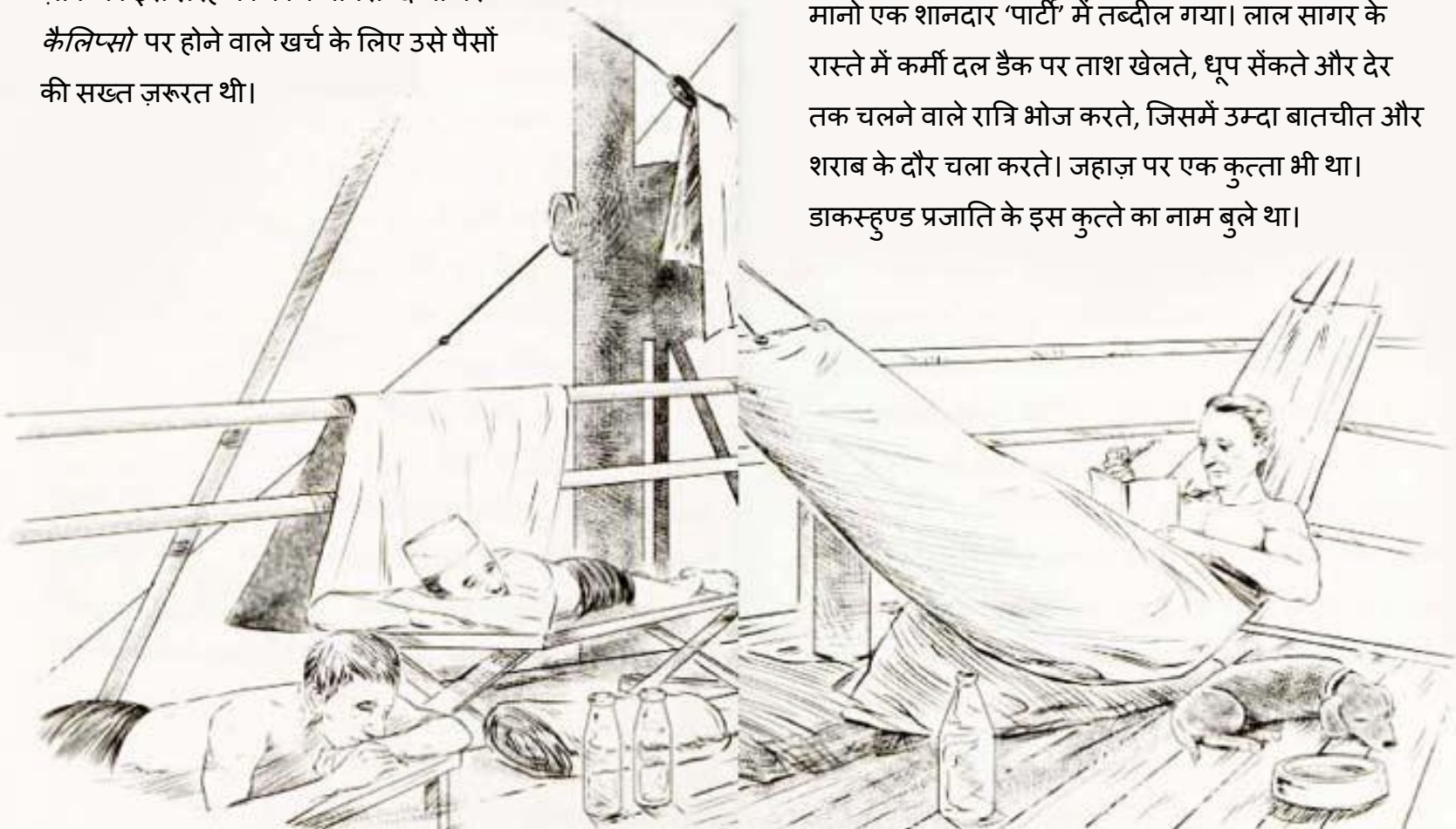

ज़ाक की नई फिल्म का शीर्षक भी *द साइलैंट वर्ल्ड* था। यह 1956 में प्रदर्शित हुई। इसको देखने वाले हक्के-बक्के रह गए। सैकड़ो शिंशुमारों (डॉल्फिन जैसी एक मछली) को करतब दिखाने वालों की तरह हवा में उछलते देख उनकी साँसें रुक-सी गईं। जोजो नामक मैरो मछली को देख दर्शक हंसे। जोजो को बचे-खुचे खाने की ऐसी लत लग गई थी कि वह गोताखोरों का पीछा करने लगा था। छानबीन के लिए निकलने से पहले उसे 'शार्क केज' में बन्द करना पड़ता था। भूखी शार्क मछलियों के दल द्वारा शिशु व्हेल का नृशंस शिकार देख दर्शकों के आँसू छलक गए।



इस फिल्म ने फ्रांस में 'पाम द'ओर' पुरस्कार जीता, जो कान फिल्मोत्सव का सर्वोच्च पुरस्कार था। अमरीका में उसे सर्वश्रेष्ठ डॉक्यूमेंटरी के लिए अकादमी अवार्ड दिया गया।

*द साइलैंट वर्ल्ड* द्वारा ज़ाक ने पूरी दूनिया की कल्पना को वश में कर लिया।

अध्याय 9

# समुद्रतल का जीवन

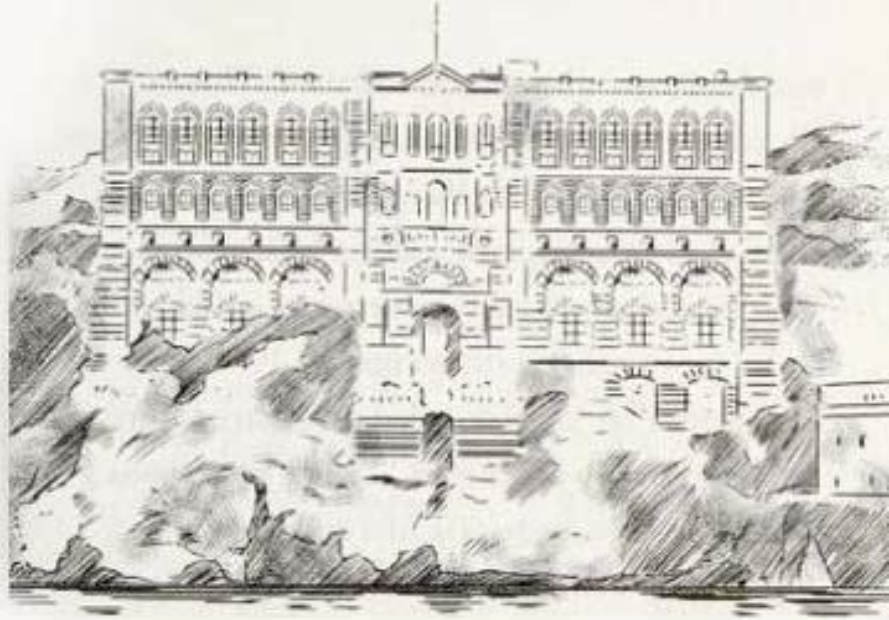

1957 में मोनैको, जो फ्रांस के दक्षिणी तट पर बसा एक छोटा-सा देश है, के शासक प्रिंस राइनिएर तृतीय ने ज़ाक के सामने एक प्रस्ताव रखा। उन्होंने ज़ाक से पूछा कि क्या वह मोनैको के समुद्र विज्ञान अजायबघर का निदेशक बनना चाहेगा? यह भी कहा कि ज़ाक *कैलिप्सो* पर अपना काम भी जारी रख सकता था। ज़ाक ने नौसेना से इस्तीफा दे दिया।

निदेशक बन ज़ाक ने अजायबघर के अक्वेरियमों में अनूठे समुद्री जीव-जन्तु रखवाए जिन्हें वह अपने अभियानों में एकत्रित करता था।

ज़ाक जितना समुद्रों को जानने-समझने, उनका अध्ययन करने लगा उतना ही उसके मन में यह अहसास बढ़ने लगा कि वे बेहद नाज़ुक हैं। उसने ग़ौर किया कि यूरोप के देश भूमध्य सागर में अपना कचरा-मलबा फेंकते हैं। इसके कारण तट के पास का पारिस्थितिकीय तंत्र, यानी जीव-जन्तु व वनस्पति जगत जिसकी छानबीन उसने बीस बरस पहले की थी, अब धीरे-धीरे मर रहा था।

ज़ाक का सपना तो यह था कि ऐसा भी कोई दिन आएगा जब इन्सान पानी के तल में रहने लगेंगे। उसे लगता था कि किसी दिन लोग महाद्वीपीय ताक (कॉन्टिनैन्टल-शेल्फ) में रहने लगेंगे। यह शेल्फ  सागर या महासागर का वह छोर होता है जो कम गहराई पर हो। उसके आगे ढ़लान के साथ समुद्र की गहराई बढ़ती जाती है। पानी के नीचे जीवन जीना कैसा होगा इसे जाँचने के लिए ज़ाक ने तीन प्रयोग किए - कॉन शैल्फ प्रथम, द्वितीय और तृतीय।

1962 में कॉन शैल्फ प्रथम में दो लोग, जिन्हें ज़ाक 'आक्वानॉटस्' (जल यात्री) कहता था, सतह से सैंतीस फीट नीचे बने आवास में रहे। उनका 'घर' एक बड़े शयनकक्ष जितना बड़ा जलरोधी कैप्सूल था। इसमें सतह से पम्प के ज़रिए हवा पहुँचाई जाती थी। पनडुब्बी के नाविकों के विपरीत 'आक्वानॉट' कैप्सूल के फर्श पर बने एक गड्ढे से, .जिसे 'मून पूल' कहा जाता था, आ-जा सकते थे। कमरे के अन्दर की हवा का दबाव पानी को कैप्सूल में भरने से रोकता था।

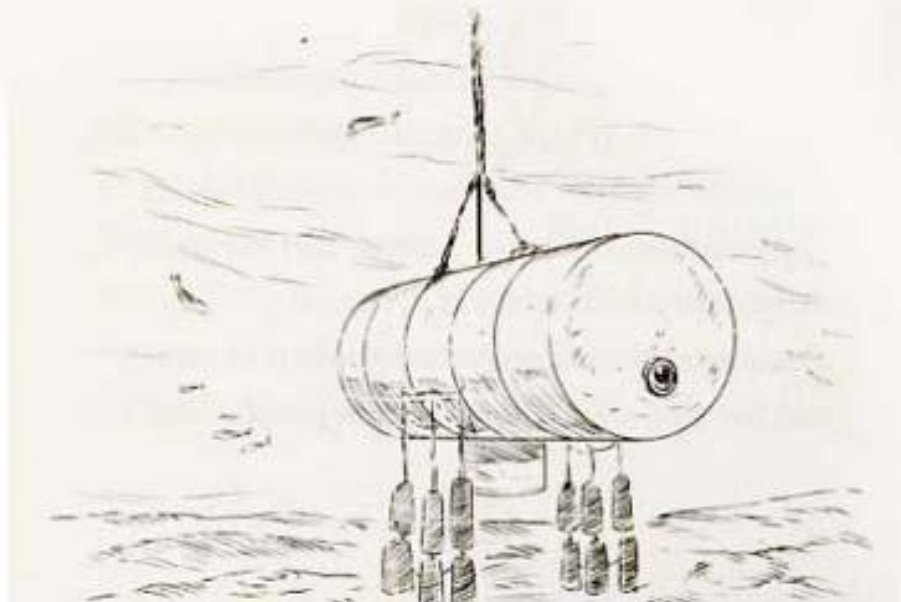

वे मार्से के तट से कुछ ही दूर एक सप्ताह तक पानी के नीचे रहते और काम करते रहे। वे अस्सी फीट की गहराई तक गोता लगाते पर कभी भी अपने घर से अधिक ऊँचाई तक नहीं उठते।

इस दौरान वे 80 प्रतिशत ऑक्सीजन और 20 प्रतिशत नाइट्रोजन के मिश्रण में सांस लेते रहे। यह अनुपात धरती पर बहने वाली हवा के अनुपात से ठीक उलटा था।

एक चिकित्सक हर दिन उनकी जाँच करता। ज़ाक भी गोता लगा उनसे मिलता, कभी तो खबरनवीसों के साथ भी। सप्ताह भर बाद जब ये आक्वानॉटस् सतह पर लौटे उनकी सेहत बिलकुल दुरुस्त थी।

ज़ाक ने सिद्ध कर दिया था कि इन्सान पाने के नीचे रह और काम कर सकता है। उसने भविष्यवाणी की कि सन् 2000 तक 'जल मानवों' का जन्म भी पानी के नीचे बने उनके घरों में हो सकेगा। वे सर्जरी द्वारा अपनी गरदनों पर गलफड़े (गिल्स) लगवाएंगे और मील भर की गहराई तक तैर सकेंगे। ज़ाक के साथी वैज्ञानिक इसे 'साइन्स फिक्शन' यानी वैज्ञानिक गल्प कहते थे। पर ज़ाक का कहना था कि वैज्ञानिक कपोल-कल्पना अक्सर भावी वास्तविकता का पूर्व संकेत होती है।

अगले साल कॉनशेल्फ द्वितीय भूमध्य सागर में सूडान के तट के पास आयोजित किया गया। वहाँ मूंगे की चट्टानों के पास पानी के नीचे दो कैप्सूल बनाए गए।

तारा मछली के आकार में बने इस स्टारफिश हाउस में इस बार पाँच लोग और एक पालतू तोता सतह से तैंतीस फीट

नीचे पूरे महीने भर रहे। कॉनशैल्फ प्रथम की तुलना में, जो एक शयनकक्ष जितना बड़ा था, स्टारफिश हाउस काफी बड़ा था। इसमें पाँच कमरे थे, एक रसोईघर था जिसमें अवलोकन के लिए गोलाकार खिड़कियाँ थीं। उनके खानसामे ने एक ट्रिगर मछली को इतना प्रशिक्षित कर लिया था कि वह काँच पर टप्पे लगाने पर 'मून पूल' में कुछ खाने आ जाती थी।

## जूल्स वर्न (1828-1905)

फ्रांसीसी उपन्यासकार जूल्स वर्न को वैज्ञानिक गल्प साहित्य का जनक माना जाता है। उन्होंने अपनी रचनाओं में जिन तकनीकों की कल्पना की थी उनमें से कई उनकी मृत्यु के बाद वास्तविकता में तब्दील हुईं।

वर्न ने अपनी किताब *फ्रॉम द अर्थ टु मून* में जिस रॉकेटनुमा अंतरिक्ष यान का वर्णन किया था उसके एक शताब्दी बाद नील आर्मस्ट्रांग ने चन्द्रमा की यात्रा की। *ट्वैन्टी थाउसैन्ड लीग अण्डर द सी* में उन्होंने बिजली से चलने वाली पनडुब्बी की बात की थी वह 1869 में एक फंतासी थी, ठीक उसी तरह जैसे उनका काल्पनिक हथियार जो टेज़र गन की तरह काम करता था। दोनों ही बाद में अस्तित्व में आए।

आज जूल्स वर्न विश्व के दूसरे नम्बर के ऐसे लेखक हैं जिनकी किताबें अनेकों भाषाओं में अनुदित हुई हैं।

एक दिन सिमोन गोता लगा स्टारफिश हाउस पहुँची और उसने कर्मीदल के लिए रात का खाना बनाया। उसे यह अनुभव बहुत ही अच्छा लगा। वहाँ शराब थी, कक्ष वातानुकूलित था, संगीत था, टेलिविज़न था, और रोचक लोगों का साथ था। रात को बाहर दमकती चट्टानें नज़र आती थीं। ऐसा बायोल्यूमिनिसेंस के कारण हो रहा था। यानी जीवों की रासायनिक प्रतिक्रिया से रोशनी पैदा हो रही थी।

सिमोन और ज़ाक एक रात अपनी शादी की छब्बीसवीं सालगिरह मनाने वहीं लौटे। बधाई के शैम्पेन जाम तो थे पर उनमें बुलबुले नहीं उठ रहे थे। ऐसा दबावयुक्त हवा के कारण हुआ था।

एक दूसरा रहवास जिसे 'डीप केबिन' कहा जाता था, बयासी फीट की गहराई पर था। उसमें दो आक्वानॉट सप्ताह भर रहे। उन्होंने चार सौ फीट की गहराई तक जा कर प्रयोग किए। डीप केबिन भयानक रूप से गर्म था, और उसमें छोटे-मोटे रिसाव भी थे। पर दोनों कर्मी ठीक रहे। वे हीलियम और ऑक्सीजन के मिश्रण में साँस लेते थे जो उनकी आवाज़ों को हास्यास्पद तरीके से ऊँची बना देता था।

कॉनशैल्फ द्वितीय परियोजना की एक फिल्म बनाई गई। *वर्ल्ड विदाउट सन* दिसम्बर 1964 में प्रदर्शित हुई। एक बार फिर ज़ाक ने सर्वश्रेष्ठ डॉक्यूमेंटरी का ऑस्कर जीता।



ज़ाक ने सिद्ध कर दिया था कि इन्सान सौ फीट की गहराई पर जी सकता था और उससे कहीं अधिक गहराई में काम कर सकता था। यह पेट्रोल कम्पनियों के लिए महत्वपूर्ण खबर थी। समुद्र तल में तेल खुदाई का युग शुरू हो चुका था। बड़ी कम्पनियाँ यह जानना चाहती थीं कि और कितनी गहराई में जा कर काम किया जा सकता है।

सो 1965 में कॉनशैल्फ तृतीय के तहत छह कर्मियों को, जिनमें ज़ाक का चौबीस वर्षीय बेटा फिलिप भी था, फ्रांस में नाइस के तट पर एक गोलक के आकार में बने आवास में रहने भेजा गया।

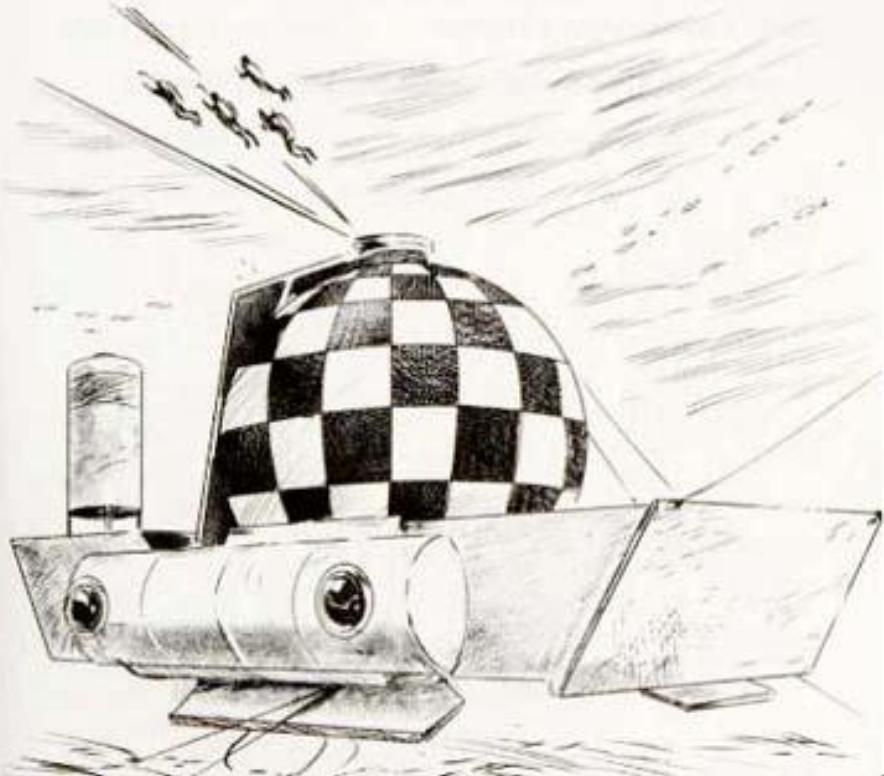

वे तीन सप्ताह तक वहाँ रहे और सतह से तीन सौ फीट से भी ज़्यादा गहराई में काम किया। यह काम उन्होंने एक नकली तेल कुँए में किया। दरअसल जाँचा यह जा रहा था कि लोग पानी के नीचे भी भारी मशक्कत के काम कर सकते हैं या नहीं। पर 98 प्रतिशत हीलियम मिश्रित हवा में साँस लेने से उनकी स्वाद और सूंघने की शक्ति भोथरी हो गई। उनकी आवाज़ें इतनी पैनी हो गईं कि बातचीत करना ही लगभग असंभव हो गया। पर उनका प्रयोग सफल रहा।

कॉनशैल्फ तृतीय में जीने के अनुभव को भी फिल्माया गया, पर उसका चलचित्र नहीं बना।

ज़ाक कुस्टो निकट भविष्य में दूरदर्शन का सितारा बनने वाला था।



अध्याय 10

# टेलिविज़न का सितारा

1960 में केवल अमरीका में ही 5 करोड़ टीवी सेट थे। ज़ाक किताबों और फिल्मों के माध्यमों में सफलता हासिल कर चुका था। पर वह तो दुनिया के तमाम लोगों को समुद्र के सौंदर्य से चौंका देना चाहता। ऐसा कर पाने का एकमात्र ज़रिया था टेलिविज़न।

अप्रेल 1966 में सीबीएस नामक अमरीकी प्रसारण कम्पनी ने कॉनशैल्फ तृतीय के विषय में एक घंटे का विशेष कार्यक्रम प्रसारित किया। इस कार्यक्रम को ऑर्सन वैल्स नामक फिल्म सितारे ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम लाखों लोगों तक पहुँचा।

इसके कुछ ही समय बाद प्रतिद्वन्दी प्रसारण कम्पनी एबीसी ने ज़ाक को बारह घंटे लम्बे टेलिविज़न कार्यक्रम को बनाने के लिए 42 लाख डॉलर देने का प्रस्ताव दिया। ज़ाक ने यह मौका लपक लिया।

दरअसल पंद्रह वर्षों के सतत उपयोग से *कैलिप्सो* खस्ताहाल हो चुका था, उसमें काफी मरम्मत की ज़रूरत थी। ज़ाक ने उसको चुस्त-दुरुस्त करवाया। साथ ही उसमें दो 'सी फ्ली' के लिए जगह बनवाई। ये छोटी पनडुब्बियाँ थीं जिसमें एक व्यक्ति बैठ सकता था, वे हज़ार फीट की गहराई तक उतर सकती थीं। इसके सहारे समुद्र में गहरे उतर कर सही कोण से छवियाँ उतारी जा सकती थीं। इसके अलावा नए स्कूबा सूट भी खरीदे गए।

*द अण्डरसी वर्ल्ड ऑफ ज़ाक कुस्टो* को एबीसी साल में चार बार प्रसारित करता था। यह प्रसारण तीन वर्ष चला। बाद में चौबीस अतिरिक्त कड़ियों (एपिसोड) के लिए नया अनुबंध किया गया। *कैलिप्सो* का कर्मी दल अगले कई सालों तक समुद्र तल की फिल्में खींचने वाला था। फिलिप कुस्टो भी इस दल में शामिल था। उसका भाई ज्यां मिशेल दल की अंतर्राष्ट्रीय यात्राओं का प्रबंध करता था।

1967 में जब *कैलिप्सो* मोनैको से निकला तो बन्दरगाह के गिर्द चट्टानों से सैकड़ों प्रशंसकों ने रंगीन कागज़ की फर्रियों की बरसात की और गुब्बारे उड़ाए।

इसकी पहली कड़ी *शार्कस्* 1968 में प्रदर्शित हुई और जनता की वाहवाही लूटने में कामयाब रही। कुस्टो के गोताखोरों को साठ फुट लम्बी व्हेल शार्क की सवारी करते देख लोग अचंभे में पड़ गए।

आगामी सालों में कर्मीदल ने आलास्का में समुद्री ऊदबिलावों को, फ्लौरिडा में समुद्री गायों को और कैलिफार्निया के तट पर दो करोड़ स्क्विड को देखा और फिल्माया। गालापागोस द्वीपों में समुद्री इगुवाना (विशाल छिपकलियाँ) का अध्ययन किया और दक्षिण अफ्रीका में दो रोएंदार सील मछलियों को गोद ले लिया। उनके नाम क्रिस्टोबल और पेपीतो रखे। कैरिबियन में ज़ाक और सहयोगियों ने खज़ाने की और पेरु व बोलिविया की सरहद पर लेक टिटिकाका की गहराइयों में इन्का कौम के सोने की तलाश की।

# छह दिवसीय युद्ध

जून 1967 में इज़रायल और उसके अरब पडौसी के बीच युद्ध छिड़ गया। यह संघर्ष छह दिनों तक चला। 10 जून तक इज़रायल ने मिस्र से सिनाई प्रायद्वीप छीन लिया था। अब लाल सागर के पूर्वी इलाके पर इज़रायल का नियंत्रण था जबकि पश्चिमी हिस्सा मिस्र के कब्ज़े में था।

लाल सागर में फिल्माते हुए *कैलिप्सो* इज़रायल और मिस्र की दोतरफा गोलाबारी में फंस गया। एक इज़रायली लड़ाकू विमान ने तो गलती से जहाज़ पर गोलियाँ तक दागीं। उस वक्त *कैलिप्सो* में सो रहे लोग भयभीत हो गए।

अगले दो महीनों में मिस्र के अधिकारी कई बार *कैलिप्सो* का निरीक्षण करने आए। ज़ाहिर था कि सभी कर्मी बेचैन थे। मिस्र के तटों पर *कैलिप्सो* को ठहरने तक की इजाज़त नहीं दी गई। और तो और मिस्र ने कई जहाज़ों को डुबा दिया ताकि सुएज़ नहर का रास्ता ही बन्द हो जाए। यह नहर लाल सागर और भूमध्य सागर को जोड़ती थी। नहर 1975 तक नहीं खुली।

*कैलिप्सो* अटक चुका था। आखिर में ज़ाक और कर्मीदल को दक्षिण की दिशा में बढ़ हॉर्न ऑफ अफ्रीका के गिर्द घूम कर वापस लौटना पड़ा।

1979 में मिस्र और इज़रायल में संधि हुई और सिनाई प्रायद्वीप मिस्र को लौटा दिया गया।

*द अण्डरसी वर्ल्ड ऑफ ज़ाक कुस्टो* ने समुद्र तल की दुनिया के अद्भुत सौन्दर्य को अमरीकी घरों की बैठकों में पहुँचा दिया। कार्यक्रम को ज़बरदस्त कामयाबी हासिल हुई। *कैलिप्सो* का कर्मीदल देखने में आकर्षक होने के साथ साहसी भी था। लोगों को उनका कप्तान ज़ाक कुस्टो भी अपने फ्रांसीसी उच्चारण और ऊनी टोपी में आकर्षक लगता था। यह कार्यक्रम लगातार आठ वर्षों यानी 1976 तक प्रसारित किया गया।



अध्याय 11

# भावी पीढ़ियाँ

ज़ाक को फिल्में बनाना बेहद पसन्द था। पर फिल्में उसके लिए हमारे सुन्दर ग्रह की नाज़ुक स्थिति के बारे में जागरूकता बढ़ाने का ज़रिया भी थीं। साठ और सत्तर के दशक में दुनिया की तमाम नदियाँ, झीलें और समुद्र हमारे मल, कचरा, और आणविक अपशिष्ट के निस्तारण का स्थान बन चुके थे। ज़ाक अक्सर अपने चहेते भूमध्य सागर के बारे में कहता था कि उसे डर है कि 'उसकी मौत सबसे पहले होगी'।

1973 में विश्व के सागरों को संरक्षित करने के लिए ज़ाक ने कुस्टो सोसायटी का गठन किया। ज़ाक उसका अध्यक्ष बना, और उसका बेटा फिलिप उपाध्यक्ष। उन्होंने संयुक्त राज्य अमरीका की कांग्रेस व अन्य सरकारी संगठनों के सामने प्रदूषण कम करने की ज़रूरत पर गवाही दी।

वर्ष समाप्त होने तक दुनिया भर के 120,000 लोगों ने कुस्टो सोसायटी को आर्थिक सहयोग दिया। चार साल में यह संख्या दुगनी हो चुकी थी।

ज़ाक ने सोसायटी के मकसद के बारे में लोगों को बताने और वित्त जुटाने के लिए विश्व भर में यात्राएं कीं। 1977 में संयुक्त राष्ट्र संघ ने ज़ाक के काम के लिए उसे पर्यावरण पुरस्कार से नवाज़ा।

ज़ाक ने एक बार कहा था कि अगर किसी इन्सान को एक रोचक ज़िन्दगी जीने का सौभाग्य मिला हो तो उसका यह फ़र्ज़ है कि वह उसे दुनिया के साथ साझा करे। इधर ज़ाक दुनिया भर में सफर कर अपने जुनून को साझा कर रहा था



कि उसे एक भयंकर खबर मिली। पुर्तगाल में टैगास नदी में अपने समुद्री विमान को उतारने की कोशिश करते हुए फिलिप दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। विस्फोट से विमान टुकड़े-टुकड़े हो गया। फिलिप का तीन दिन तक अता-पता न मिला। ज़ाक सिमोन और ज्यां मिशेल के साथ बेसब्री से इन्तज़ार करता रहा। अंत में वह दुखद समाचार मिला जिसकी उन्हें आशंका थी। फिलिप की मौत हो चुकी थी। परिवार ने पुर्तगाल के तट से पच्चीस मील दूर समुद्र में ही उसे दफनाया।

ज्यां मिशेल ने कुस्टो सोसायटी की वे सारी ज़िम्मेदारियाँ संभाल लीं जो अब तक फिलिप की थीं।

ज़ाक गहरे शोक में डूब गया। इस घटना के बाद वह सार्वजनिक रूप से अपने प्यारे बेटे का कभी ज़िक्र तक न कर सका।

इस गहरी उदासी से वह कैसे निकला? ज़ाक ने खुद को अपने काम में झोंक दिया। विख्यात खोजियों के नक्शे कदम पर चलते हुए उसने एमेज़ॉन और मिसिसिपि नदियों की छानबीन की।

सिमोन के लिए भी अपने जवान बेटे को खोना उतना ही दुखदाई था। वह कैलिप्सो में अपने केबिन तक सिमट कर रह गई। 1990 में कैन्सर से उसकी मृत्यु हुई।

सिमोन की मौत के साल भर बाद ज़ाक ने फ्रैन्सीन ट्रिपलैट से शादी की जिसे वह पिछले पंद्रह वर्षों से जानता था।

1990 के आरंभ में ज़ाक अपने जीवन के आठवें दशक में था। क्या वह सेवानिवृत्त होने को तैयार था? कतई नहीं! दुनिया भर की बड़ी तेल कम्पनियाँ और देश अन्टार्टिक महाद्वीप में खनिजों और पेट्रोल के लिए खुदाई करने पर आमादा थे।



ज़ाक को यह मंज़ूर नहीं था। वह कई राष्ट्रों के नेताओं से मिला। उसने सामान्य जनता से दस लाख हस्ताक्षर जमा किए। ''यह महाद्वीप,'' उसने कहा, ''जिसकी छानबीन मानव सबसे अंत में कर रहा है, काश वह मानव द्वारा बख्शा जाने वाला पहला महाद्वीप बने''।

स्वाभाविक ही था कि ज़ाक इस विषय पर भी एक फिल्म बनाता। दुनिया के विभिन्न महाद्वीपों के छह बच्चों के साथ उसने अन्टार्टिक महाद्वीप की यात्रा की। मानो उसके संकेत का ही इन्तज़ार करती चार कूबड़धारी व्हेल मछलियों ने उनका स्वागत किया। ज़ाक और बच्चों ने वहाँ एक इगलू भी बनाया।

इस फिल्म की प्रतियाँ अमरीकी कांग्रेस और सर्वोच्च न्यायालय के हरेक सदस्य को भेजी गईं। ज़ाक की कोशिश कामयाब हुई। अन्टार्टिका में निजी विकास पर रोक लगी। यह तय हुआ कि उस इलाके का उपयोग केवल वैज्ञानिक शोध के लिए ही किया जाएगा।

1991 में ज़ाक ने राष्ट्र संघ से अनुरोध किया कि वह भावी पीढ़ियों के अधिकारों का एक विधेयक बनाए। वह चाहता था कि दुनिया यह समझे कि अगर पर्यावरण संबंधी मौजूदा समस्याओं के हल जल्द ही नहीं तलाशे जाते तो हमारे बच्चों और हमारे नाती-पोतों को भयंकर तकलीफें झेलनी होंगी। कुस्टो सोसायटी और अन्य संगठनों ने दुनिया भर में लाखों दस्तखत इकट्ठे किए। ज़ाक का मानना था कि भावी पीढ़ियाँ एक अप्रदूषित और अक्षत धरती की हक़दार हैं।

1997 में इस अधिकार विधेयक के मसौदे को राष्ट्र संघ की सामान्य सभा में प्रस्तुत किया गया।

उसी वर्ष ज़ाक को हृदयघात हुआ। अपनी सत्यासवीं सालगिरह के दो सप्ताह बाद पेरिस के अपार्टमेंट में उनकी मृत्यु हो गई।



2001 में विश्व के विभिन्न महाद्वीपों से आए पाँच बच्चों ने राष्ट्र संघ में भावी पीढ़ियों के अधिकार विधेयक को पढ़ कर सुनाया।

एक अकेले फ्रांसीसी स्वयं-सेवक ने, जो निश्चित रूप से ज़ाक कुस्टो से प्रेरित रहा होगा, विधेयक को पारित करने के लिए ज़रूरी अंतिम छह हज़ार हस्ताक्षर प्रेषित किए।

एक व्यापक दृष्टि से देखें तो ज़ाक कुस्टो का काम कभी खत्म न हो सकेगा। पर उसे वे लोग लगातार आगे बढ़ा रहे हैं जिन्हें ज़ाक पीछे छोड़ गए। उनकी दूसरी पत्नी फ्रैन्सीन कुस्टो सोसायटी की अध्यक्ष बनीं। उनके बेटे ज्यां मिशेल ने ज़ाक पर एक किताब लिखी। वे डॉक्यूमेंटरी फिल्में भी बनाते हैं।

कॉनशैल्फ प्रयोगों के पचास साल से भी ज़्यादा गुज़र जाने के बाद ज़ाक के पोते फेबियन ने सतह से साठ फीट नीचे एक माह से भी अधिक समय बिताया।

ज़ाक और फ्रैन्सीन के भी दो बच्चे थे - डायान और पियेर-ईव। पियेर कुस्टो सोसायटी की एक शाखा, कुस्टो डाइवर्स का मुख्य कार्यकारी अधिकारी है। यह संस्था समुद्री जीवों के संरक्षण के लिए विश्व भर के गोताखोरों को एकजुट करने को समर्पित है।

1996 में ज़ाक के प्रिय जहाज़ *कैलिप्सो* को सिंगापुर में एक बजरे ने टक्कर मारी और वह वहीं बन्दरगाह में ही डूब गया। पर कुस्टो सोसायटी ने उसके हिस्सों को फुर्ती से निकाला और फ्रांस ले गई। उन्हें उम्मीद है कि उसकी मरम्मत की जा सकेगी ताकि वह नई पीढ़ी को उस शख्सियत के बारे में बता सके जो दुनिया भर के सागरों से बेइन्तहा प्यार करता था, उनके संरक्षण को समर्पित था। ताकि भावी पीढ़ियाँ ज़ाक से प्रेरणा ले सकें।

# ज़ाक कुस्टो का जीवनक्रम

1910 - 11 जून को सेंट आंद्रे द कबज़ैक, फ्रांस में जन्म।

1914 - डूविल के समुद्रतट शिविर में तैरना सीख।

1920 - परिवार रहने के लिए न्यू यॉर्क गया। वहाँ वरमॉन्ट के ग्रीष्म शिविर में भागीदारी की।

1923 - वापस फ्रांस लौटा। अपना पहला मूवी कैमरा खरीदा।

1930 - फ्रांस की नौसेना में भरती हुआ।

1936 - पिता की स्पोर्टस् कार के साथ वोज़ पहाड़ियों में दुर्घटनाग्रस्त हुआ। पहली बार गॉगल्स पहन कर गोता लगाया।

1937 - सिमोन मैल्क्योर से विवाह।

1943 - सैनरी के पास दुनिया के पहले आक्वा-लंग का परीक्षण किया।

1945 - सामुद्रिक शोध दल का गठन।

1950 - *कैलिप्सो* की खरीद।

1953 - फ्रैडरिक ड्यूमा के साथ अपनी पहली किताब *द साइलैन्ट वर्ल्ड* का प्रकाशन।

1956 - *द साइलैन्ट वर्ल्ड* चलचित्र का प्रदर्शन, जिसने दर्शकों को अचंभित कर दिया।

1957 - मोनैको के समुद्र-विज्ञान अजायबघर का निदेशक बनना। नौसेना से सेवानिवृत्ति।

1962 से 1965 - कॉनशैल्फ प्रथम, द्वितीय और तृतीय के प्रयोग।

1968 - *द अण्डरसी वर्ल्ड ऑफ ज़ाक कुस्टो* का प्रदर्शन।

1973 - कुस्टो सोसायटी की स्थापना।

1979 - ज़ाक के छोटे पुत्र फिलिप की पुर्तगाल में मृत्यु।

1985 - राष्ट्रपति रॉनल्ड रीगन ने ज़ाक को प्रैसिडैन्शियल मैडल ऑफ ऑनर से नवाज़ा।

1990 - सिमोन की कैन्सर से मृत्यु।

1991 - फ्रैन्सीन ट्रिपलैट से विवाह।

1996 - सिंगापुर के बन्दरगाह में *कैलिप्सो* का डूबना।

1997 - पेरिस में मृत्यु।

# वैश्विक तिथिक्रम

1910 - बॉय स्काउटस् अमरीका की स्थापना।

1912 - 15 अप्रेल को टाइटैनिक जहाज़ डूबा।

1914 - प्रथम विश्व युद्ध आरंभ।

1918 - प्रथम विश्व युद्ध समाप्त। युरोप में स्पैनिश फ्लू महामारी। अगले दो वर्षों में पचास करोड़ लोग संक्रमित।

1920 - बैन्ड-एड का आविष्कार।

1928 - एलैक्ज़ैण्डर फ्लैमिंग द्वारा पेनिसिलिन का आविष्कार।

1931 - न्यू यॉर्क में एम्पायर स्टेट बिल्डिंग का निर्माण।

1937 - पहली महिला पायलट एमेलिया इयरहार्ट ने अटलान्टिक पार उड़ान भरी और तब गायब हो गई।

1939 - पोलैण्ड पर जर्मनी का हमला, द्वितीय विश्व युद्ध आरंभ।

1945 - संयुक्त राज्य अमरीका ने हिरोशिमा और नागासाकी पर एटम बम बरसाए। द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त ।

1948 - राष्ट्र के रूप में इज़रायल की स्थापना।

1956 - एल्विस प्रेसली का गीत 'हाउन्ड डॉग' लोकप्रिय बना।

1967 - इज़रायल, मिस्र, सीरिया और जॉर्डन के बीच छह दिवसीय युद्ध।

1971 - फ्लौरिडा में वॉल्ट डिज़नी वर्ल्ड खुला।

1977 - जॉर्ज लूकास की फिल्म स्टार वॉरस् का प्रदर्शन।

1984 - दुनिया का पहला सैल फोन मोटरोला डायना 8000 एक्स की बिक्री आरंभ। इसका वज़न करीब दो पाउण्ड था और कीमत 3,995 डॉलर।

1990 - दक्षिण अफ्रीका में नैल्सन मण्डेला को सत्ताइस साल बाद जेल से रिहा किया गया।

1997 - डायाना, प्रिंसेस ऑफ वेल्स की पेरिस में कार दुर्घटना से मृत्यु।

# पुस्तक सूची


कुस्टो, ज़ाक तथा फ्रैडरिक ड्युमास्, ***द साइलैन्ट वर्ल्ड***, हार्पर एण्ड ब्रदर्स पब्लिशर्स्, न्यू यॉर्क, 1953

कुस्टो, ज़्यां मिशेल, डैनियल पैसनर के साथ, ***माय फादर, द कैप्टन: माय लाइफ विद ज़ाक कुस्टो***, नैशनल ज्योग्राफिक सोसायटी, वाशिंगटन, 2010

डुटैम्पल, लैसले ए., ***ज़ाक कुस्टो***, लर्नर पब्लिकेशन्स् कम्पनी, मिनियापोलिस, 2000

जोनास, जैरल्ड, ***ज़ाक कुस्टो : ओशन्स् इम्प्रैसारियो डाइस्***, न्यू यॉर्क टाइम्स्, जून 26,1997

मैटसन, ब्रैड, ***ज़ाक कुस्टो, द सी किंग***, पैनथियन बुक्स, न्यू यॉर्क, 2009

ओलहॉफ, जिम, ***ज़ाक कुस्टो***, एबीडीओ पब्लिशिंग कम्पनी, मिनियापोलिस

याकरीनो, डैन, ***द फैन्टास्टिक अण्डरसी लाइफ ऑफ ज़ाक कुस्टो***, एल्फ्रैड ए. नॉफ, न्यू यॉर्क, 2009